मुंबई, ठाणे, नवी मुंबई, पनवेल, रायगड़, उल्हासनगर, कल्याण एवं अंबरनाथ का
लोकप्रिय हिंदी दैनिक
उल्हास विकास
■ वर्ष : 44 ■ अंक : 62 ■ मंगलवार 12 मई 2026 ■ पृष्ठ 4
3 रुपए
संपादक - हीरो अशोक बोधा BMM, L.L.B., M.A. Mobile.:- 9822045566
epaper.ulhasvikas.com

पृष्ठ.. 4 पर पढ़ें..

धुरंधर की मेकअप आर्टिस्ट ने बदला सलमान का लुक

पुरानी इमारतों का स्ट्रक्चरल आडिट हो

आपदा से निपटने की तैयारी

मानसून पूर्व समीक्षा बैठक में जिलाधिकारी ने दिए निर्देश

ठाणे. आगामी मानसून को देखते हुए, ठाणे जिला प्रशासन ने लोगों की सुरक्षा को सबसे ज़्यादा प्राथमिकता देते हुए तैयारियां तेज़ कर दी हैं। मानसून के दौरान होने वाले हादसों से बचने के लिए, ठाणे जिलाधिकारी और डिस्ट्रिक्ट डिज़ास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी के चेयरमैन, डॉ. श्रीकृष्ण पांचाल ने संबंधित एजेंसियों को साफ़ आदेश दिए कि जिले में खतरनाक पुलों, पुलियों के साथ-साथ जर्जर और पुरानी इमारतों का स्ट्रक्चरल आडिट तुरंत किया जाए।

ठाणे जिला कलेक्टर ऑफिस और डिस्ट्रिक्ट डिज़ास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी द्वारा मिलकर आयोजित 'प्री-मानसून तैयारी रिव्यू मीटिंग 2026' कमेटी हॉल में हुई। इस मौके पर डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर डॉ. श्रीकृष्ण पांचाल ने ये निर्देश दिए। जिला कलेक्टर डॉ. श्रीकृष्ण पांचाल ने संबंधित विभागों को जिले में खतरनाक पुलों, पुलियों, जर्जर और पुरानी इमारतों, और संवेदनशील पब्लिक इमारतों का तुरंत स्ट्रक्चरल इंस्पेक्शन करने के साफ निर्देश दिए हैं। उन्होंने साफ किया कि संभावित खतरों की पहचान करके और पहले से कार्रवाई करके बड़ी जान और पैसे के नुकसान से बचा जा सकता है। मीटिंग में बोलते हुए डॉ. पंचाल ने कहा कि मानसून के दौरान सबसे ज़्यादा खतरा टूटी-फूटी इमारतों, बाढ़ वाले इलाकों और लैंडस्लाइड वाले इलाकों में होता है। इसलिए, पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट को जिले के सभी पुलों, पुलियों, सरकारी इमारतों, स्कूलों, हॉस्टल और पुरानी रिहायशी इमारतों का फिजिकल इंस्पेक्शन करना चाहिए और उनकी स्ट्रक्चरल सेफ्टी की जांच करनी चाहिए।

कंट्रोल रूम को तुरंत एक्टिवेट करने का आदेश

सभी सब-डिविजनल ऑफिसर, तहसीलदार और संबंधित डिपार्टमेंट को अपने-अपने लेवल पर कंट्रोल रूम को तुरंत एक्टिवेट करने और कोऑर्डिनेशन सिस्टम को 24 घंटे एक्टिव रखने के निर्देश दिए गए। रेजिडेंट डिप्टी कलेक्टर और डिस्ट्रिक्ट डिज़ास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी के चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर डॉ. संदीप माने ने कंप्यूटर प्रेजेंटेशन के ज़रिए डिज़ास्टर मैनेजमेंट प्लान के बारे में जानकारी दी।

'आपदा मित्र' वॉलंटियर्स की संख्या बढ़ाने और उन्हें ट्रेनिंग देने पर जोर

- मानसून के दौरान गंदे पानी और फैलने वाली बीमारियों का खतरा बढ़ने के कारण, हेल्थ डिपार्टमेंट को दवाइयों का स्टॉक, मेडिकल टीम, एम्बुलेंस और फर्स्ट एड की सुविधाएं तैयार रखने के भी निर्देश दिए गए।
- साथ ही, चूंकि आपदाओं के दौरान लोकल वॉलंटियर्स की भूमिका अहम होती है, इसलिए मीटिंग में यह साफ किया गया कि 'आपदा मित्र' वॉलंटियर्स की संख्या बढ़ाने और उन्हें ट्रेनिंग देने पर जोर दिया जाएगा।
- लैंडस्लाइड वाले गांवों, बाढ़ वाले इलाकों, इंडस्ट्रियल जोन, नदी किनारे की बस्तियों और दूर-दराज के इलाकों में कम्युनिकेशन सिस्टम का डिटेल्ड रिव्यू भी किया गया।

उल्हास विकास की खबर का असर

हम भाजपा से युति के लिए तैयार -शिवसेना

- शिवसेना ने युति का दिया प्रस्ताव
- भाजपा के जवाब की प्रतीक्षा

अंबरनाथ. अंबरनाथ में शिवसेना-भाजपा से युति करने के लिए तैयार है. शिवसेना ने हमेशा शहर विकास के मुद्दे को आगे रखा है. हमारे पास पूरा बहुमत 32 नगरसेवकों का है. हमारे वरिष्ठ नेताओं, सांसद श्रीकांत शिंदे एवं विधायक बालाजी किणीकर ने अंबरनाथ चुनाव के तुरंत बाद भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष रविंद्र चव्हाण से युति के संबंध में बैठक की थी, लेकिन परिणाम सामने नहीं आया. हम शुरू से ही भाजपा से युति के पक्ष में हैं और आज भी हैं. भाजपा से दोस्ती वाली बात अंबरनाथ सांसद कार्यालय में आयोजित पत्रकार परिषद में पूर्व नगराध्यक्ष सुनिल चौधरी और पूर्व उप नगराध्यक्ष अब्दुल शेख ने कही है.

'अंबरनाथ में शिवसेना-भाजपा युति के आसार' इस शीर्षक से हमने सोमवार को अखबार में खबर प्रकाशित किया था. वह अब सही साबित होने जा रही है. हमने खबर में भाजपा के अभिजीत करंजुले का प्रस्ताव भी लिखा था कि अगर शिवसेना युति के लिए प्रस्ताव रखता है तो हम विचार करेंगे. अब्दुल शेख ने कहा कि राज्य में, मनपा, नपा में शिवसेना-भाजपा की युति है. अंबरनाथ में भी युति के लिए हम तैयार हैं. शिवसेना के वरिष्ठ नेताओं के कहने पर वह ये बात कह रहे हैं. ऐसा उन्होंने कहा है. तीन सभा के स्थगित होने के बारे में भी उन्होंने खुलासा किया. पुरानी बातों को भुलाकर हम एक साथ आ सकते हैं. ऐसा पत्रकारों को बताया गया. उस समय नगरसेविका रोहिनी भोईर भी उपस्थित थी. उन्होंने भी शिवसेना-भाजपा युति पर जोर दिया. पत्रकार परिषद में नगरसेवक कुणाल भोईर, धनंजय सुर्वे, शैलेश भोई आदि उपस्थित थे. अंबरनाथ में शिवसेना ने युति के लिए हाथ बढ़ाया है. देखना है भाजपा का क्या जवाब आता है.

नाला सफाई ठेकेदार के पास 4 डंपर, पोकलेन होना जरूरी

- इन शर्तों को तुरंत हटाने की मांग RPI ने नपा से की

अंबरनाथ. अंबरनाथ नगर परिषद ने बरसात से पूर्व शहर के छोटे बड़े नाले साफ सफाई की ई निविदा जारी की है, जिसमें मुख्याधिकारी ने ठेकेदारों के लिए एक अजीब शर्त रखी है, जो आज से पहले कभी नहीं थी. इस शर्त को हटाने की मांग आरपीआई शहराध्यक्ष दीपक धनवडे एवं समाजसेवक देवदत्त सरवदे ने मुख्याधिकारी को एक पत्र देकर की है. नाले सफाई का ठेका लेने वालों के लिए ये शर्त रखी गई है कि उनके पास अपनी मालकी का चार जेसीबी, चार पोकलेन और चार डंपर होना चाहिए. ऐसी निविदा 8 मई को ई निविदा जारी की गई है. धनवडे का कहना है कि मुख्याधिकारी ने ये निविदा श्रीमंत ठेकेदारों के लिए जारी की है. सामान्य ठेकेदार तो नाला सफाई का ठेका ले ही नहीं सकता है. इस शर्त को हटाकर फिर से निविदा ठेका जारी करने को कहा गया है. एक तो बरसात सर पर है. ऐसे शर्त के कारण सामान्य ठेकेदार निविदा भार नहीं सकता. शंका ये जताई जा रही है कि क्या बरसात से पूर्व कोई ठेका भरेगा और बरसात से पूर्व शहर के नाला सफाई का कार्य पूरा होगा. ऐसी शर्तें रखने की जरूरत ही नहीं है. नपा के अधिकारी अगर नाला सफाई पर बराबर ध्यान रखेंगे तो शहर में नाला सफाई ठीक ढंग से होगा. लेकिन ऐसा होता नहीं है. अधिकारी कार्यालय में ही बैठे रहते हैं और नाला सफाई ठीक ढंग से नहीं होती है. चार डंपर, चार जेसीबी, चार पोकलेन वाली शर्त को तुरंत हटाने की मांग दीपक धनवडे ने की है.

CM की उपस्थिति में सिंधी समाज को मिला मालिकाना हक

नागपुर. विदर्भ सिंधी विकास परिषद, नागपुर द्वारा आयोजित 'कब्जाधारक - लीज़ पट्टा (मालिकाना हक) वितरण एवं नगरसेवकों का भव्य सत्कार समारोह' में मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की प्रमुख उपस्थिति में संपन्न हुआ। इस अवसर पर मध्य प्रदेश के भोपाल दक्षिण-पश्चिम विधानसभा क्षेत्र के विधायक भगवानदास सबनानी, अमरावती के महापौर श्रीचंद तेजवानी सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि सिंधी समाज ने भारत में शरणार्थी के रूप में आने के बाद शून्य से अपनी शुरुआत की थी, लेकिन आज वही समाज व्यापार, उद्योग एवं विभिन्न क्षेत्रों में देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। उन्होंने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सिंधी समाज को नागरिकता प्रदान करने का अभियान चलाया गया तथा अब मालिकाना हक के पट्टे देने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया है।

मुख्यमंत्री फडणवीस जी ने कहा कि सिंधी समाज जिन भूमियों पर वर्षों से निवास कर रहा था, उन्हें अतिक्रमण की श्रेणी में माना जाता था, जिसके कारण समाज लंबे समय से मालिकाना हक पट्टों की मांग कर रहा था। राज्य सरकार ने इस समस्या का समाधान करते हुए सिंधी समाज को वर्ग-1 के अंतर्गत शत-प्रतिशत मालिकाना हक के पट्टे देने का निर्णय लिया है। इससे हजारों सिंधी परिवारों को बड़ी राहत मिलने जा रही है।

मुख्यमंत्री श्री देवेंद्र फडणवीस ने विशेष रूप से कहा कि आने वाले समय में उल्हासनगर के सिंधी समाज के लिए अलग तरीके से नियमितीकरण करने का निर्णय लिया जाएगा। इस घोषणा से उल्हासनगर के सिंधी समाज में खुशी का वातावरण है।

हॉस्पिटल में तोड़फोड़ करने वाले तीन के ख़िलाफ़ अपराध दर्ज

उल्हासनगर. उल्हासनगर में एक मरीज़ की मौत के बाद सरकारी सेंट्रल हॉस्पिटल में हुए हंगामे के मामले में आख़िरकार तीन लोगों के ख़िलाफ़ केस दर्ज किया गया है। सेंट्रल पुलिस ने तोड़फोड़ करने के लिए कार्रवाई शुरू की.

मिली जानकारी के मुताबिक, 7 मई को सुबह करीब 1 से 2 बजे के बीच डॉ. ममता पांडे एक्सीडेंट डिपार्टमेंट में चीफ़ मेडिकल ऑफ़िसर के तौर पर काम कर रही थीं। भगवान लिम्बोरे की इलाज के दौरान मौत हो गई। आरोप है कि मौत की जानकारी मिलने पर आशा लिंबोरे, मंगेश लिंबोरे और शुभम लिंबोरे (निवासी म्हारलगांव, ताल. कल्याण) ने गुस्सा दिखाया और हॉस्पिटल में हंगामा किया।

7 रिक्शा ड्राइवरों के खिलाफ क्रिमिनल केस

कल्याण. रामनगर पुलिस ने डोंबिवली पूर्व इलाके के सात रिक्शा ड्राइवरों के खिलाफ इंडियन पीनल कोड के तहत क्रिमिनल केस दर्ज किए हैं। इन ड्राइवरों ने डोंबिवली शहर के अलग-अलग हिस्सों में पैसेंजर ले जाते समय रिक्शा स्टैंड और सड़क के किनारे अपने रिक्शा पार्क किए थे। पिछले साल पुलिस ने कल्याण, डोंबिवली के 200 से ज़्यादा रिक्शा ड्राइवरों के खिलाफ केस दर्ज किए हैं, जिन्होंने इस तरह से पब्लिक ट्रांसपोर्ट में रुकावट डाली है।

सब-रीजनल ट्रांसपोर्ट ऑफिसर और ट्रैफिक पुलिस ने रिक्शा ड्राइवरों को रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन और पब्लिक जगहों पर रिक्शा स्टैंड पर अपने रिक्शा पार्क करने और पैसेंजर ले जाने के निर्देश दिए हैं। इन निर्देशों को नज़रअंदाज़ करते हुए, कई रिक्शा चालक अपने रिक्शा सार्वजनिक सड़कों, चौराहों और गलियों में पार्क करके ट्रैफ़िक में रुकावट डालते हैं। डिप्टी कमिश्नर अतुल झेंडे के आने के बाद से शहर में ऐसे रिक्शा चालकों को ढूंढकर उनके ख़िलाफ़ क्रिमिनल केस दर्ज करने का अभियान शुरू किया गया है।

इन रिक्शा चालकों के खिलाफ हुए मामले दर्ज

- एक रिक्शा चालक, मोहम्मद उबेदुल्ला शेख (26) कुछ दिन पहले, उसने अपना रिक्शा रिक्शा स्टैंड पर पार्क करने के बजाय दोपहर 12 बजे डोंबिवली पूर्व राजाजी रोड इलाके में व्यस्त सड़क पर पार्क कर दिया। दूसरे गाड़ी वाले उसे किनारे हटने के लिए कह रहे थे, फिर भी उसने नहीं सुना। इस समय, रामनगर पुलिस स्टेशन के गश्त पर तैनात कांस्टेबल संदीप शिंदे वहां से गुज़र रहे थे। उन्होंने शेख से जानकारी ली और उसके खिलाफ क्रिमिनल केस दर्ज किया।
- कॉन्स्टेबल सुनील पारधी ने आयरेगांव ज्योति नगर झुग्गी बस्ती के रिक्शा ड्राइवर हीरालाल रामदास जायसवाल (35) के खिलाफ केस दर्ज किया है, जिसने डोंबिवली ईस्ट में डॉ. राठ रोड पर रेलवे स्टेशन के पास बीच वाली सीढ़ी के पास अपना रिक्शा पार्क किया था, रिक्शा पार्किंग की जगह छोड़कर ट्रैफिक और पैदल चलने वालों के लिए रुकावट पैदा की। कॉन्स्टेबल विलास चव्हाण ने तुकारामनगर के रिक्शा ड्राइवर मयूर कुवेस्कर के खिलाफ केस दर्ज किया है.
- पांडुरंगवाड़ी के रिक्शा ड्राइवर सचिन निकम (25) के खिलाफ क्रिमिनल केस दर्ज किया गया है, जिसने इसी तरह से इसी सड़क पर अपना रिक्शा पार्क किया था। दावड़ी गांव के रिक्शा ड्राइवर आकाश सोनी ने अपना रिक्शा डोंबिवली ईस्ट रेलवे स्टेशन के पास सीढ़ियों पर पार्क किया था। कांस्टेबल अमित देसाई को जैसे ही इस बारे में पता चला, उन्होंने उसके खिलाफ केस दर्ज कर लिया। कांस्टेबल गणेश अभाले ने नंदीवली टेकड़ी के एक रिक्शा ड्राइवर कमलेश बिंद (25) के खिलाफ केस दर्ज किया, जिसने अपना रिक्शा रेलवे एंट्रेंस के पास इस तरह से पार्क किया था जिससे यात्रियों को दिक्कत हो।

बदलापुर में राजनीतिक विवाद बढ़ा

शिवसेना पार्षदों ने BJP पदाधिकारी के बेटे को पीटा

बदलापुर. शिवसेना और BJP के बीच अंदरूनी विवाद के चलते बदलापुर शहर में एक चौंकाने वाली घटना हुई है। शिवसेना के पार्षदों ने BJP पदाधिकारी के बेटे को बेरहमी से पीटा है। इस मामले में दस लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। साथ ही, बदलापुर में हुई इस घटना से राजनीति में भी चर्चा शुरू हो गई है।

मिली जानकारी के मुताबिक, बदलापुर में शिवसेना और BJP के बीच बड़ा विवाद हुआ है। रोहन पाटिल, सूरदास पाटिल और शिंदे शिवसेना के कुछ कार्यकर्ताओं ने BJP पदाधिकारी के बेटे सनी पाटिल की पिटाई कर दी। दोनों ग्रुप एक हल्दी समारोह में आमने-सामने आ गए और इसी समय यह घटना हुई।

सनी पाटिल के पिता मारुति पाटिल पार्षद रोहन पाटिल के खिलाफ नगर निगम चुनाव लड़ रहे थे। तभी से दोनों ग्रुप के बीच विवाद बढ़ गया था। इसी बीच, हल्दी की रस्म के मौके पर जब दोनों ग्रुप आमने-सामने आए तो बहस शुरू हो गई। बाद में, बहस लड़ाई में बदल गई।

सनी पाटिल ने आरोप लगाया कि नगरसेवक रोहन पाटिल और पूर्व नगरसेवक सूरदास पाटिल और उनके साथियों ने सनी पाटिल को पीटा। हालांकि, इस मामले में नगरसेवक रोहन पाटिल और सूरदास पाटिल समेत दस लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया गया है।

आरोपी ने की अस्पताल में तोड़फोड़

उल्हासनगर. आधारवाडी जेल में बंद अजबिल अंसारी नामक एक आरोपी को इलाज के लिए सेंट्रल अस्पताल में लाया तो उसने पुलिस की मौजूदगी में जमकर हंगामा किया.

जानकारी के मुताबिक पेट दर्द की शिकायत के बाद उसे इलाज के लिए अस्पताल लाया गया था, जहां डॉक्टरों ने जांच और प्राथमिक उपचार के बाद उसे वापस जेल भेजने के निर्देश दिए. बताया जा रहा है कि आरोपी अस्पताल में भर्ती होना चाहता था. जब डॉक्टरों ने उसे एडमिट करने से इनकार किया, तो वह भड़क उठा और अस्पताल के 13 नंबर केबिन, जहां पुलिसकर्मी बैठते हैं, वहां की कांच में सिर मारकर उसे तोड़ दिया. आरोपी ने डॉक्टरों के सामने मुझे भर्ती करो की जिद पकड़ ली, जिससे अस्पताल परिसर में कुछ देर के लिए अफरा तफरी और तनाव का माहौल बन गया.

15वां मानवता का घर का निर्माण

- वालेकर परिवार के इस उपक्रम की शहर में सराहना

अंबरनाथ. अंबरनाथ शिवसेना ने गरीबों, जरूरतमंदों के लिए 15वां मानवता का घर निर्माण करके दिया है. वालेकर परिवार की ओर से ये नेक कार्य नगरसेवक राजेंद्र वालेकर गत कई वर्षों से कर रहे हैं. मानवता का घर ये उपक्रम आज अंबरनाथ शहर में समाजसेवा का एक प्रेरणादायी उदाहरण बन गया है. अभी हाल ही में 15वें घर को पूरा करके उसका उद्घाटन राजेंद्र वालेकर ने किया है.

उन्होंने कहा है कि प्रत्येक घर सिर्फ दीवार और छत नहीं, उस परिवार के लिए अपने जीवन की नई शुरूआत है. जिनके पास कुछ नहीं, उनको आधार देना ही सच्ची सेवा है. ऐसा उन्होंने कहा है. उनके द्वारा गत वर्ष एक ऐसा घर बनाया गया, जिसमें गरीब परिवार बारिश के दिनों में भीग कर सोता था. ये उनसे देखा नहीं गया और उन्होंने उनको नया घर बनाकर दिया. वालेकर परिवार के इस नेक कार्य की शहर में चारों ओर सराहना की जा रही है. राजेंद्र वालेकर ने आगे कहा कि मानवता के इस प्रयास में अनेक लोगों ने उनका साथ दिया. आशीर्वाद दिया और प्रोत्साह दिया. उन्होंने उन सबका आभार व्यक्त किया है.

उन्होंने कहा कि जरूरतमंदों और गरीबों को नया घर मिलने के बाद उनके चेहरे पर जो खुशी नजर आती है, यही उनके कार्य का सच्चा सम्मान है. आगे भी ऐसे ही मानवता का घर गरीबों को बनाकर देने का संकल्प वालेकर परिवार ने किया है.

ठाणे जिले में पानी की कटौती लागू

- MIDC की पानी की सप्लाई पंद्रह दिन में एक बार बंद होगी

ठाणे. लघु पाटबंधारे विभाग ने ठाणे जिले के शहरी इलाकों को पानी सप्लाई करने वाले बारवी डैम में 31 अगस्त तक पानी का स्टोरेज रहे इसके लिए प्लान बनाने का निर्देश दिया है। इसी के तहत, जिले में पानी सप्लाई का अहम सोर्स माने जाने वाले एमआईडीसी ने पंद्रह दिन में एक बार पानी की कटौती लागू करने का फैसला किया है. इससे ऐसे संकेत मिल रहे हैं कि ठाणे, कल्याण-डोंबिवली, उल्हासनगर, मीरा-भायंदर, अंबरनाथ और नवी मुंबई समेत इंडस्ट्रियल इलाकों के लोगों को पानी की कमी की समस्या का सामना करना पड़ेगा।

MIDC ठाणे जिले के बारवी डैम से पानी उठाकर शहरों में सप्लाई करता है। इसमें ठाणे, कल्याण-डोंबिवली, उल्हासनगर, मीरा-भायंदर, अंबरनाथ और नवी मुंबई समेत इंडस्ट्रियल इलाके शामिल हैं। इसे इन शहरों में पानी सप्लाई का अहम सोर्स माना जाता है। इस बीच, क्योंकि इस साल बारिश कम होगी, इसलिए वॉटर रिसोर्स डिपार्टमेंट ने संबंधित डिपार्टमेंट को डैम एरिया में पानी सप्लाई की प्लानिंग करने का ऑर्डर दिया है।

बारवी और आंध्र डैम से पानी खींचने वाले सिस्टम को मीटिंग करके प्लान बनाने का निर्देश दिया गया ताकि 31 अगस्त तक डैम में पानी का स्टोरेज काफी हो जाए। लघु पाटबंधारे विभाग के अधिकारियों ने बताया कि इसके अनुसार, उन सिस्टम द्वारा पानी कम करने की प्लानिंग की जा रही है। MIDC के एग्जीक्यूटिव इंजीनियर दिलीप आव्हाड ने बताया कि माइनर इरिगेशन डिपार्टमेंट ने प्लान बनाने के निर्देश दिए हैं ताकि कोट बारवी और आंध्र डैम में 31 अगस्त तक पानी का स्टोरेज काफी हो जाए, और इसके अनुसार, MIDC से पानी की सप्लाई पंद्रह दिन में एक बार 24 घंटे के लिए बंद कर दी जाएगी।

पानी की सप्लाई के आंकड़े

इंडस्ट्रियल – 150 मिलियन लीटर
नवी मुंबई- 75 मिलियन लीटर
ठाणे- 141 मिलियन लीटर
मीरा-भायंदर-90 मिलियन लीटर
कल्याण- 75 मिलियन लीटर
उल्हासनगर- 155 मिलियन लीटर
पनवेल- 1 मिलियन लीटर
अंबरनाथ- 21 मिलियन लीटर
ग्राम पंचायत और अन्य- 55 मिलियन लीटर

अंबरनाथ का रिलायंस पेट्रोल पंप चर्चा में !

अंबरनाथ. राज्य में गर्मी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है और मुंबई और उसके आस-पास के इलाकों में तापमान 40 डिग्री सेल्सियस को पार कर गया है, जिससे लोग परेशान हैं। ऐसे में, अंबरनाथ पश्चिम में रिलायंस पेट्रोल पंप के मालिक की एक अच्छी पहल शहर में चर्चा का विषय बन गई है। चिलचिलाती गर्मी से फ्यूल भरवाने आने वाले ड्राइवरों को थोड़ी राहत देने के लिए, यहां ठंडे पानी और एयर कूलर की खास सुविधाएं दी गई हैं। जो लोग गर्मी में काम के लिए बाहर जाते हैं और पेट्रोल पंप पर लाइनों में खड़े होते हैं, उन्हें यहां ठंडी हवा और ठंडे पानी की चुस्की मिल रही है, जो बहुत बड़ी मदद है। पसीने से तर और प्यासे लोगों के लिए यह सुविधा चिलचिलाती गर्मी में मृगतृष्णा नहीं, बल्कि इंसानियत का सच्चा सहारा है।

बिजनेस के साथ-साथ इंसानियत को ध्यान में रखकर उठाए गए इस कदम को देखकर कस्टमर्स ने खुशी जताई है। लोग यह महसूस कर रहे हैं कि ऐसी सुविधा दूसरी पब्लिक जगहों पर भी मिलनी चाहिए, और इस पंप का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। पंप मालिक, जो सिर्फ़ बिज़नेस ही नहीं बल्कि सोशल कमिटमेंट भी निभा रहे हैं, उनकी हर तरफ़ से तारीफ़ हो रही है, और अंबरनाथकर ने भी इस पहल को दिल से पसंद किया है।

जैसे पके हुए फलों को गिरने के सिवा कोई भय नहीं वैसे ही पैदा हुए मनुष्य को मृत्यु के सिवा कोई भय नहीं. – वाल्मीकि

उल्हास विकास

संपादकीय

पटना में विद्यार्थियों पर लाठी

बिहार के पटना में विद्यार्थियों के प्रदर्शन के दौरान राज्य की पुलिस का जैसा रवैया सामने आया है, उसे आम जनता के लोकतांत्रिक अधिकारों के तहत किसी मसले पर सरकार से विचार की मांग के स्वर का दमन करने की तरह देखा जा सकता है।

सवाल है कि अगर नागरिकों के सामने अपनी किसी मांग के लिए आंदोलन या प्रदर्शन करने के अलावा कोई विकल्प नहीं रह जाता है, तो संवाद के जरिए उनकी समस्या का समाधान करने या कोई रास्ता निकालने की कोशिश की जाएगी या उन्हें चुप कराने के लिए सीधे लाठी-डंडे का सहारा लिया जाएगा?

हैरानी की बात है कि शिक्षक भर्ती से संबंधित प्रक्रिया में लगातार देरी और टालमटोल से परेशान विद्यार्थियों ने जब पटना में विरोध प्रदर्शन करने की कोशिश की, तो उनकी मांगों पर विचार करने के बजाय उन पर लाठी चार्ज किया गया और महिलाओं को भी नहीं बख्शा गया। अगर उन्हें रोकना भी था, तो पानी की बौछार या कोई अन्य उपाय करने के बजाय बेहरमी से उन पर लाठियां चलाना ही अकेला उपाय क्यों माना गया?

राज्य की पुलिस के इस रवैये को क्या किसी भी तरह से प्रदर्शनकारियों के प्रति एक लोकतांत्रिक शासन की प्रतिक्रिया कहा जा सकता है? अगर नागरिकों के किसी हिस्से को सरकार से अपने अधिकार या अन्य मांग करने से इस तरह रोका जाएगा, तो उसमें नागरिक अधिकारों की क्या जगह रह जाएगी?

आखिर क्या वजह है कि विद्यार्थियों के सामने शिक्षक भर्ती को लेकर गुमराह करने का आरोप लगाने की नौबत आई है? यह कोई पहला मौका नहीं है जब किसी आंदोलन या प्रदर्शन को लेकर सरकार का यह रुख सामने आया है।

इससे पहले भी कई बार विद्यार्थियों और अन्य नागरिक समूहों ने अलग-अलग मुद्दे पर प्रदर्शन किया है, लेकिन उनकी मांगों पर विचार या बातचीत करने के बजाय उन्हें चुप करने और भगाने के लिए लाठी चार्ज का सहारा लिया गया।

अफसोसनाक यह है कि बिहार में जो पार्टियां फिलहाल सत्ता में हैं, उन्होंने एक समय जनता की उपेक्षा किए जाने को ही मुद्दा बनाया था। हकीकत यह है कि आंदोलनों या प्रदर्शन के प्रति पिछले कुछ वर्षों से राज्य सरकार का जो रवैया है, उससे लोकतंत्र और नागरिक अधिकारों के लिए जगह सिमट रही है।

विमर्श

बंगाल को पटरी पर लाने की चुनौती

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के परिणामों ने इस बार केवल सत्ता का गणित नहीं बदला, बल्कि लोकतंत्र के अर्थ को भी एक नई सामाजिक व्याख्या दी है। आसग्राम से कलिता माझी, हिंगलगंज से रेखा पात्रा और पनिहाटी से रत्ना देवनाथ जैसी महिलाओं की जीत केवल चुनावी सफलता नहीं है।

यहां एक घरेलू सहायिका है, एक श्रमिक और वंचित वर्ग से आई महिला है तो एक ऐसी मां भी है जिसने अपनी निजी पीड़ा और सामाजिक अपमान को अपनी शक्ति और दृढ़निश्चय में बदल दिया। इन महिलाओं की उपस्थिति भारतीय राजनीति के उस बदले हुए चेहरे को सामने लाती है, जहां पहली बार हाशिए पर खड़ी दिखाई देने वाली स्त्रियां सत्ता और प्रतिनिधित्व के केंद्र में दिखाई देने लगी हैं। इन महिलाओं की जीत को यदि हम मात्र चुनावी परिणाम के रूप में देखेंगे तो यह हमारी सामाजिक दृष्टि की असफलता होगी। चुनावी आंकड़ों और राजनीतिक विमर्शों से परे इन महिलाओं की जीत नारी सशक्तीकरण का हस्ताक्षर है। यही वह नारी सशक्तीकरण है, जिसका आह्वान स्वतंत्रता के बाद से लगातार किया जाता रहा है और जिसकी चर्चा बौद्धिक तथा वैचारिक वर्ग वर्षों से करता आया है। कलिता माझी, रेखा पात्रा और रत्ना देवनाथ जैसी महिलाओं की जीत के साथ स्वाभाविक अपेक्षा यह थी कि भारत में नारीवादी विचारधारा के समर्थक और उसके मुखर प्रवर्तक खुलकर इनके साथ खड़े दिखाई देंगे। यह अपेक्षा

इसलिए भी थी, क्योंकि वर्षों से स्त्री-प्रतिनिधित्व, राजनीतिक भागीदारी और नेतृत्वकारी उपस्थिति को लेकर निरंतर आवाज उठाई जाती रही है। किंतु आश्चर्य यह है कि तमाम डिजिटल मीडिया मंचों से लेकर वैचारिक और बौद्धिक विमर्शों तक एक विचित्र-सी चुप्पी दिखाई देती है।

वे स्वर, जो सामान्यतः स्त्री-अधिकारों और महिला नेतृत्व के प्रश्न पर अत्यंत मुखर दिखाई देते हैं, आज कहीं खो से गए हैं। नारीवादी चिंतक नैंसी फ्रेजर अपने चर्चित निबंध 'फ्राम रीडिस्ट्रिब्यूशन टू रिकग्निशन?' में इस बात पर गंभीर प्रश्न उठाती हैं कि यदि नारीवाद केवल कुछ सफल और विशेषाधिकार प्राप्त महिलाओं की उपलब्धियों तक सीमित रह जाए तो वह समाज की वास्तविक असमानताओं को नहीं बदल सकता।

शायद यही कारण है कि जब साधारण और संघर्षपूर्ण जीवन से निकली महिलाएं राजनीति और सार्वजनिक नेतृत्व तक पहुंचती हैं तो समाज उन्हें उतनी सहजता से स्वीकार नहीं कर पाता, जितनी सहजता से प्रभावशाली और संपन्न पृष्ठभूमि से आने वाली महिलाओं को स्वीकार करता है।

बेल हुक्स ने अपनी पुस्तक 'फेमिनिस्ट थ्योरी : फ्राम मार्जिन टू सेंटर' में लिखा है कि मुख्यधारा का नारीवादी विमर्श लंबे समय तक मुख्यतः विशेषाधिकार प्राप्त महिलाओं के अनुभवों के इर्द-गिर्द केंद्रित रहा। शायद यही कारण है कि श्रम, अभाव और संघर्ष से निकली महिलाओं को वह सहज स्वीकार्यता, प्रशंसा और मान्यता नहीं मिल पाती, जो प्रभावशाली और संपन्न पृष्ठभूमि से आने वाली महिलाओं को अपेक्षाकृत आसानी से प्राप्त हो जाती है।

भारत की कोई भी राजनीतिक विचारधारा अथवा दल जब दलित, वंचित और संघर्षशील महिलाओं को मुख्यधारा की राजनीति तक पहुंचाने का अवसर देता है, तब सबसे पहले उन महिलाओं के साहस और संघर्ष को सम्मान मिलना चाहिए। उन्हें केवल किसी राजनीतिक दल के चश्मे से देखकर मौन हो जाना शायद उस व्यापक सामाजिक उद्देश्य को सीमित कर देना है, जिसकी बात दशकों से की जाती रही है।

नारीवाद का उद्देश्य केवल स्त्रियों को प्रतिनिधित्व दिलाना नहीं, बल्कि लैंगिक शोषण और दमन की संरचनाओं को समाप्त करना है। स्त्री संघर्ष को केवल वैचारिक विमर्शों तक सीमित करके नहीं देखा जा सकता, उसे उन महिलाओं के जीवनानुभवों, वर्गीय संघर्षों और सामाजिक यथार्थ के साथ भी जोड़कर समझना होगा, जो हाशिए से निकलकर नेतृत्व तक पहुंचती हैं। तब उसका प्रभाव केवल निजी उपलब्धि तक सीमित नहीं रहता। यह स्थिति समाज की लोकतांत्रिक कल्पना, स्त्री आकांक्षाओं और प्रतिनिधित्व की पारंपरिक सीमाओं को भी बदलती है।

प्रत्येक साँस अनमोल है।

- संत राजिन्दर सिंह जी महाराज

स्थान - सावन कृपाल रूहानी मिशन, सावन आश्रम, परम संत कृपाल सिंह जी महाराज चौक, खेमानी रोड, उल्हासनगर-२

देखें सत्संग आस्था चैनल पर हर रोज़ सोम - शनि सुबह ८.२० से ८.४० तक

दिल्ली में अपराधियों का बढ़ता दुस्साहस

आखिरकार चीन ने दुनिया के सामने यह सच कबूल लिया है कि पिछले वर्ष भारत के 'आपरेशन सिंदूर' के दौरान उसने पाकिस्तान की सहायता की थी। यह पहली बार है, जब चीन ने इस संघर्ष में अपनी प्रत्यक्ष भूमिका स्वीकार की है। हालांकि भारत ने संघर्ष विराम के बाद विश्वास के साथ यह दावा किया था और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी इस तरह के खुलासे हुए थे, लेकिन चीन ने अब तक इन्हें खारिज कर दिया था।

दरअसल, चीन वैश्विक जगत को यह दिखाने की कोशिश कर रहा था कि भारत-पाक संघर्ष के दौरान उसकी भूमिका एक तटस्थ देश की रही है। मगर, चीन और पाकिस्तान की नजदीकियां किसी से छिपी नहीं हैं। अब चीन की इस स्वीकारोक्ति से यह स्पष्ट है कि आने वाले समय में भारत को सुरक्षा के मोर्चे पर एक साथ कई चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है और इसी लिहाज से अपनी रक्षा नीतियां, कूटनीति और रणनीति तैयार करनी होंगी।

पिछले कुछ समय से ऊपरी तौर पर चीन का रुख भले ही भारत को लेकर आक्रामक न रहा हो, लेकिन वैश्विक स्तर पर उसकी छवि एक ऐसे देश की है, जिस पर पूरी तरह भरोसा नहीं किया जा सकता।

गौरतलब है कि पिछले वर्ष 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में

हुए आतंकी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ गया था। इसके जवाब में भारत ने 'आपरेशन सिंदूर' चलाकर सीमा पार आतंकियों के कई ठिकानों पर हमला किया था। इस कार्रवाई में सौ से ज्यादा आतंकियों के मारे जाने की खबर आई थी।

भारत के उप सेना प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल राहुल आर सिंह ने पिछले साल जुलाई में यह दावा किया था कि चीन ने इस संघर्ष के दौरान पाकिस्तान को तकनीकी मदद प्रदान की थी। भारत की सैन्य तैनाती की निगरानी के लिए उसने अपने उपग्रहों का भी इस्तेमाल किया था। तब चीन ने इस दावे को खारिज कर दिया था।

मगर बीते गुरुवार को चीन के विमानन उद्योग निगम के चेंगदू वायुयान डिजाइन एवं अनुसंधान संस्थान के एक वरिष्ठ इंजीनियर ने मीडिया से एक साक्षात्कार में माना कि आपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान को प्रौद्योगिकी मदद प्रदान की गई थी।

दरअसल, पाकिस्तान की वायुसेना के पास चीन निर्मित जे-10सीई लड़ाकू विमानों का बेड़ा है, जिनका उत्पादन चीन के विमानन उद्योग निगम की एक सहायक कंपनी द्वारा किया जाता है। खबरों के मुताबिक, चीन ने भारत-पाक संघर्ष को अपने लड़ाकू विमानों की क्षमता को परखने की एक प्रयोगशाला की तरह लिया और पाकिस्तान को तकनीकी मदद मुहैया कराई।

साफ है कि चीन और पाकिस्तान का रक्षा सहयोग अब केवल हथियारों की आपूर्ति तक सीमित नहीं रह गया है। पाकिस्तान के जरिए चीन अपने आधुनिक हथियारों और निगरानी प्रणालियों का वास्तविक युद्ध स्थितियों में परीक्षण कर रहा है।

चीन की यह स्वीकारोक्ति ऐसे समय में सामने आई है, जब वह पाकिस्तान को अपना जे-35 बमवर्षक विमान बेचने की योजना बना रहा है। ऐसे में चीन के इस कबूलनामे को अपने लड़ाकू विमानों को पूरी तरह सक्षम दिखाने और उन्हें सैन्य हथियारों के बाजार में ज्यादा प्रतिस्पर्धी बनाने की रणनीति के रूप में भी देखा जा रहा है।

बहरहाल, चीन की चालबाजी से यह साफ है कि भारत को भविष्य में संघर्ष की स्थिति में और अधिक सतर्क रहना होगा। साथ ही भारत को चीन के नापाक इरादों को कूटनीति के जरिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रमुखता से उठाना चाहिए।

दुनिया का रहस्यमयी सबसे खतरनाक गड्ढा!

दुनिया में कई ऐसी जगहें हैं, जो अपनी रहस्यमयी बनावट और खतरनाक बनावट की वजह से लोगों को हैरान कर

जरा हट के

देती हैं. इन दिनों एक ऐसा ही विशाल गड्ढा चर्चा में है, जिसे दुनिया के सबसे खतरनाक गड्ढों में गिना जा रहा है. इस गड्ढे की गहराई और अंदर का नजारा देखकर लोग सहम उठते हैं. जैसे ही कोई इसके भीतर झांकता है, उसे ऐसा लगता है मानो किसी दूसरी दुनिया की झलक मिल रही हो.

नरक का दरवाजा भी कहते है इसे लोग?

यह रहस्यमयी गड्ढा यमन के अल-महरा क्षेत्र में स्थित 'भरहुत का कुआं' (Well of Barhout) माना जाता है, जिसे स्थानीय लोग 'नरक का दरवाजा' भी कहते हैं. इसकी गहराई करीब 100 से 250 मीटर तक बताई जाती है, जबकि चौड़ाई भी काफी ज्यादा है. लंबे समय तक इस गड्ढे के बारे में

तरह-तरह की कहानियां प्रचलित रहीं, जिनमें इसे जिन्नों और रहस्यमयी शक्तियों का ठिकाना बताया गया. हालांकि, वैज्ञानिकों ने इन दावों को खारिज करते हुए इसे एक प्राकृतिक भूगर्भीय संरचना बताया है. विशेषज्ञों के अनुसार, इस तरह के गड्ढे चट्टानों के धंसने, पानी के कटाव और जमीन के अंदर खाली जगह बनने से तैयार होते हैं, जिन्हें 'सिंकहोल' कहा जाता है. इस गड्ढे के अंदर का माहौल बेहद अंधकारमय और नम है, जहां अजीब तरह की संरचनाएं, चट्टानें और कभी-कभी सांप या अन्य जीव भी पाए जाते हैं. नीचे से आने वाली दुर्गंध और सीमित ऑक्सीजन इसे और भी खतरनाक बना देती है. हाल ही में जब एक टीम ने सुरक्षा उपकरणों के साथ इस गड्ढे के अंदर उतरकर जांच की, तो कई चौंकाने वाली बातें सामने आईं. अंदर पानी, गुफाओं जैसी संरचनाएं और जीव-जंतुओं के निशान मिले, लोगों का कहना है यहां कुछ रहस्यमयी चीजे हैं. यह जगह आज भी लोगों के लिए रहस्य और डर का केंद्र बनी हुई है.

प्रशासन और विशेषज्ञ लगातार लोगों को चेतावनी देते हैं कि बिना सुरक्षा के ऐसे स्थानों के पास जाना बेहद जोखिम भरा हो सकता है. जरा सी लापरवाही गंभीर हादसे का कारण बन सकती है.

दही भिंडी

खाता-खजाना

सामग्री :

- 250 ग्राम ताजी भिंडी (अच्छी तरह धोकर, पोंछकर और 1-1 इंच के टुकड़ों में कटी हुई)
- 2 सरसों का तेल
- 1 कप गाढ़ा दही
- 1 बड़ा प्याज
- 1 बड़ा टमाटर
- 1 चम्मच अदरक-लहसुन का पेस्ट
- 1 चम्मच बेसन
- आधा चम्मच जीरा और 1 चुटकी हींग
- सूखे मसाले: 1 चम्मच धनिया पाउडर, आधा चम्मच हल्दी पाउडर, 1 चम्मच कश्मीरी लाल मिर्च पाउडर, और आधा चम्मच गरम मसाला।
- नमक स्वादानुसार
- 2-3 बड़े चम्मच तेल
- थोड़ा-सा हरा धनिया

बनाने की विधि

सबसे पहले एक पैन में 2 चम्मच तेल गरम करें। इसमें कटी हुई भिंडी डालें और मध्यम आंच पर 5 से 7 मिनट तक भूनें। भिंडी को तब तक पकाना है जब तक उसका चिपचिपापन खत्म न हो जाए और उस पर हल्की सुनहरी परत न आ जाए। एक कटोरी में फेंटा हुआ दही लें। अब इस दही में धनिया पाउडर, हल्दी, लाल मिर्च पाउडर और एक चम्मच बेसन डाल दें। इन सभी चीजों को दही में अच्छी तरह मिला

लें। अब एक कड़ाही में तेल गरम करें। उसमें जीरा और हींग डालें। जीरा चटकने के बाद बारीक कटा प्याज डाल दें। प्याज को तब तक भूनें जब तक वह अच्छे से सुनहरा न हो जाए। इसके बाद अदरक-लहसुन का पेस्ट डालें और 1 मिनट तक और पकाएं ताकि इसका कच्चापन निकल जाए।

अब कड़ाही में पिसा हुआ टमाटर डाल दें और साथ ही स्वादानुसार नमक भी मिला दें. इसे तब तक पकाएं जब तक कि मसाला किनारों से तेल न छोड़ने लगे। कड़ाही में वह दही वाला मसालों का पेस्ट डालें और लगातार चम्मच से चलाते रहें। इसे तब तक चलाना है जब तक कि ग्रेवी में उबाल न आ जाए। ग्रेवी में उबाल आने के बाद, इसमें पहले से फ्राई करके रखी हुई भिंडी डाल दें। ऊपर से गरम मसाला छिड़कें और अच्छी तरह मिला लें। अब कढ़ाई को ढक दें और धीमी आंच पर 4-5 मिनट तक पकने दें ताकि भिंडी के अंदर मसालों का पूरा स्वाद चला जाए।

लंगड़ा और तोतापरी क्यों कहलाए भारत के मशहूर आम?

दिलचस्प है इनके नामों के पीछे की कहानी

गर्मियों में लोग भले ही चिलचिलाती धूप और पसीने से परेशान रहते हैं, लेकिन इस मौसम में मिलने वाला आम किसी तोहफे से कम नहीं होता। फलों का राजा आम कई लोगों का पसंदीदा फल होता है। दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में आम की कई किस्में पाई जाती है। खुद अपने देश भारत में ही आम की कई किस्मों का स्वाद चखने को मिलता है। भारत में पाए जाने वाले हर आम का अपना एक अलग मिजाज, अपना रंग और अपनी एक खास मिठास होती है। आइए आज आपको बताते हैं भारत के सबसे मशहूर आमों के बारे में :

■ हापुस

महाराष्ट्र का यह आम दुनिया भर में अपनी बेहतरीन मिठास और खुशबू के लिए जाना जाता है। बिना रेशे वाला यह केसरिया आम सबसे प्रीमियम और महंगी किस्मों में गिना जाता है, जिसकी विदेशों में भी भारी डिमांड है। इसका नाम पुर्तगाली जनरल अफोंसो डी अल्बुकर्क के नाम पर रखा गया है और इसे GI टैग भी प्राप्त है।

■ दशहरी

आम की इस किस्म की उत्पत्ति लखनऊ के पास दशहरी गांव में स्थित एक ही पेड़ से हुई थी। मलिहाबाद भारत के कुल आम उत्पादन का लगभग 70% उत्पादन करता है, जिसमें मुख्य रूप से दशहरी किस्म के आम शामिल हैं। यह आम की सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली किस्म है।

■ चौसा

आम की यह किस्म उत्तर भारत खासकर बिहार में काफी मशहूर है। इस आम से जुड़ी एक प्रचलित कहानी के मुताबिक इसे 16वीं सदी में शेर शाह सूरी ने सबसे पहले लगाया था। यह अपनी गजब की मिठास और रस के लिए जाना जाता है।

■ लंगड़ा

उत्तर प्रदेश के बनारस की शान 'लंगड़ा' आम पकने के बाद भी बाहर से हरे रंग का ही रहता है। इस आम का नाम वाराणसी में सबसे पहले इसकी खेती करने वाले एक लंगड़े पुजारी के नाम पर रखा गया है। जुलाई-अगस्त में मिलने वाला यह आम बेहद रसीला होता है और इसकी फैन-फॉलोइंग बहुत तगड़ी है।

■ केसर

गुजरात के अहमदाबाद और जूनागढ़ से निकला यह आम अपनी हल्की केसरिया महक के लिए मशहूर है। 1931 में पहली बार इसकी खेती नवाबों द्वारा की गई थी। स्वाद में यह हापुस को कड़ी टक्कर देता है और आमरस के लिए सबसे पसंदीदा किस्म है।

■ नीलम

यह उन कुछ किस्मों में से एक है, जो लगभग हर भारतीय राज्य में उगाई जाती हैं। यह मौसम में सबसे आखिर में पकती है और इसलिए इस आम का मौसम अगस्त तक चलता रहता है, जब बाकी सभी किस्में खत्म हो जाती हैं।

■ तोतापरी

तोतापरी जैसाकि नाम से पता चलता है, यह आम दिखने में बिल्कुल तोते की चोंच जैसा होता है। इसलिए इसे यह नाम दिया गया है। इसके स्वाद की बात की जाए, तो यह बहुत ज्यादा मीठा नहीं होता। वही वजह है कि इसका इस्तेमाल सलाद, खट्टा-मीठा अचार और चटनी बनाने में होता है।

आज का राशिफल

मेष : कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय सोच-समझकर करें। व्यवसाय ठीक चलेगा। धार्मिक अनुष्ठान पूजा-पाठ इत्यादि का कार्यक्रम आयोजित हो सकता है। कोर्ट-कचहरी के कार्य मनोनुकूल रहेंगे। मानसिक शांति रहेगी। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। समय अनुकूल है।

वृषभ : बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे। व्यावसायिक यात्रा लाभदायक रहेगी। भाग्य का साथ मिलेगा। नौकरी में चैन रहेगा। निवेश शुभ रहेगा। घर-बाहर प्रसन्नता रहेगी। पार्टनरों का सहयोग मिलेगा। प्रमाद न करें। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। शारीरिक कष्ट संभव है।

मिथुन : कार्यप्रणाली में सुधार होगा। सामाजिक काम करने की इच्छा रहेगी। मान-सम्मान मिलेगा। सुख के साधन प्राप्त होंगे। नई योजना बनेगी। तत्काल लाभ नहीं मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय लाभदायक रहेगा। नौकरी में मातहतों का सहयोग मिलेगा। घर-बाहर प्रसन्नता रहेगी।

कर्क : व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। कारोबार में वृद्धि के योग हैं। शारीरिक कष्ट संभव है। किसी व्यक्ति से कहासुनी हो सकती है। स्वाभिमान को ठेस लग सकती है। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। आय बनी रहेगी। पुराना रोग उभर सकता है। खर्च सामने आएंगे। कर्ज लेना पड़ सकता है।

सिंह : किसी दूसरे व्यक्ति की बातों में न आएं। कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय सोच-समझकर करें। व्यापार अच्छा चलेगा। नौकरी में मातहतों से कहासुनी हो सकती है। लेन-देन में सावधानी रखें। कुसंगति से बचें। वाहन व मशीनरी के प्रयोग में सावधानी रखें। पुराना रोग उभर सकता है।

कन्या : घर-बाहर प्रसन्नता रहेगी। भाइयों का सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य हो सकता है। धन प्राप्ति सुगम होगी। शरीर में कमर व घुटने आदि के दर्द से परेशानी हो सकती है। लेन-देन में सावधानी रखें। चिंता तथा तनाव रहेंगे। शत्रुभय रहेगा। कोर्ट व कचहरी के कार्य अनुकूल रहेंगे।

तुला : धनलाभ के अवसर हाथ आएंगे। भूमि व भवन संबंधी बाधा दूर होगी। बड़ा लाभ हो सकता है। रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। परीक्षा व साक्षात्कार आदि में सफलता मिलेगी। भाग्य का साथ रहेगा। शेयर मार्केट से लाभ होगा। शत्रु पस्त होंगे। सुख के साधनों की प्राप्ति पर व्यय होगा।

वृश्चिक : किसी वरिष्ठ व्यक्ति का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। व्यापार से लाभ होगा। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा। प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। कष्ट व भय सताएंगे। भाग्य का साथ मिलेगा। किसी मांगलिक कार्य में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। विद्यार्थी वर्ग सफलता प्राप्त करेगा।

धनु : कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। दु:खद समाचार प्राप्त हो सकता है। भागदौड़ अधिक रहेगी। थकान व कमजोरी महसूस होगी। आय में निश्चितता रहेगी। व्यापार ठीक चलेगा। निवेश सोच-समझकर करें। राजभय रहेगा। वाणी पर नियंत्रण रखें। शारीरिक कष्ट संभव है। यात्रा में जल्दबाजी न करें।

मकर : प्रयास सफल रहेंगे। सामाजिक कार्यों में रुचि रहेगी। मान-सम्मान मिलेगा। नौकरी में प्रशंसा होगी। कार्यसिद्धि होगी। प्रसन्नता रहेगी। चोट व रोग से बचें। लेन-देन में जल्दबाजी न करें। किसी व्यक्ति के बहकावे में न आएं। व्यापार ठीक चलेगा। निवेश शुभ रहेगा। पारिवारिक सहयोग मिलेगा।

कुंभ : दूर से शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी। घर में मेहमानों का आगमन होगा। कोई मांगलिक कार्य हो सकता है। आत्मविश्वास बढ़ेगा। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे। व्यापार-व्यवसाय ठीक चलेगा। निवेश शुभ रहेगा। प्रसन्नता बनी रहेगी। चिंता तथा तनाव बने रहेंगे। यश बढ़ेगा।

मीन : व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। निवेश शुभ रहेगा। व्यापार मनोनुकूल लाभ देगा। किसी बड़ी समस्या से मुक्ति मिल सकती है। किसी न्यायपूर्ण बात का भी विरोध हो सकता है। विवाद न करें। कुबुद्धि हावी रहेगी। चोट व रोग से बचें।

-ज्योतिषाचार्य पंडित अतुल शास्त्री

ठंडा पानी पिएं या नॉर्मल

■ गर्मियों में आपके शरीर को असल में किसकी जरूरत है?

गर्मियों के मौसम में शरीर के तापमान को संतुलित बनाए रखने के लिए पानी पीना सबसे जरूरी काम है, लेकिन प्यास लगने पर अक्सर यह उलझन होती है कि फ्रिज का बर्फ जैसा ठंडा पानी पिएं या फिर नॉर्मल पानी? असल में, इसका चुनाव पूरी तरह से आपके शरीर की जरूरत और उस वक्त की स्थिति पर निर्भर करता है। आइए जानते हैं कि इन दोनों ऑप्शन्स में से आपके लिए क्या बेहतर है।

■ ठंडा पानी

जब आप कड़ी धूप से लौटते हैं या मेहनत करने के बाद बहुत पसीना बहा चुके होते हैं, तो ठंडा पानी पीकर गजब की शांति मिलती है।

फायदे: ठंडा पानी शरीर के बढ़े हुए तापमान को बहुत तेजी से कम करता है और तुरंत ताजगी व ठंडक का एहसास दिलाता है।

नुकसान : विज्ञान के अनुसार, बहुत ज्यादा ठंडा पानी पीने से शरीर की ब्लड वेसल्स सिकुड़ सकती हैं, जिसका हल्का असर आपके पाचन पर पड़ता है। इसके अलावा, अचानक बहुत ठंडा पानी पीने से गले में खराश, सर्दी-जुकाम, पेट में ऐंठन और एसिडिटी जैसी पाचन से जुड़ी कई दिक्कतें भी शुरू हो सकती हैं।

■ नॉर्मल पानी

दूसरी तरफ, नॉर्मल यानी कमरे के तापमान वाला पानी शरीर के लिए बहुत ज्यादा सहज और सुरक्षित माना जाता है।

आसान पाचन: नॉर्मल पानी शरीर के प्राकृतिक तापमान के काफी करीब होता है। इस वजह से शरीर इसे आसानी से एब्जॉर्ब कर लेता है और यह हमारे पाचन तंत्र पर कोई फालतू दबाव नहीं डालता।

खाने के समय है बेस्ट: भोजन करते समय या खाना खाने के तुरंत बाद नॉर्मल पानी पीना ही सबसे सही रहता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि बहुत ठंडा पानी आपकी पाचन प्रक्रिया को धीमा कर सकता है, जबकि नॉर्मल पानी इसे संतुलित रखता है।

40° में भी नहीं खलेगी गर्मी

■ रोज घर से निकलने से पहले पिएं ये ड्रिंक

■ मिलेगी दूध की भी शक्ति

गर्मी के मौसम में लोग अक्सर ठंडा महसूस करने के लिए बाजार में मिलने वाले कोल्ड ड्रिंक्स पीते हैं, लेकिन हमारे पारंपरिक देसी पेय शरीर को ज्यादा फायदा पहुंचाते हैं. भारत में सदियों से ऐसे कई घरेलू ड्रिंक्स बनाए जाते रहे हैं, जो स्वाद के साथ सेहत का भी ध्यान रखते हैं. रागी अंबली उन्हीं में से एक ड्रिंक है. यह दक्षिण भारत का बहुत पुराना और लोकप्रिय पेय है, जिसे खासतौर पर तेज गर्मी के दिनों में पिया जाता है.

कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु जैसे राज्यों में लोग लंबे समय से इस ड्रिंक को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाते आए हैं. इसका इतिहास 200 साल पुराना बताया जाता है. ये ड्रिंक 40 डिग्री के तापमान में भी शरीर को ठंडा रखने में मददगार होती है. आज भी कई परिवार इस पारंपरिक रेसिपी को पसंद करते हैं.

■ रागी अंबली के फायदे

रागी अंबली सिर्फ स्वादिष्ट ही नहीं, बल्कि पोषण से भरपूर भी होती है. रागी में कैल्शियम काफी मात्रा में

पाया जाता है, जो हड्डियों को मजबूत बनाने में मदद करता है. कहा जाता है कि इसमें गाय के दूध से कई गुना ज्यादा कैल्शियम होता है. इसके अलावा यह पाचन को बेहतर बनाता है और शरीर को लंबे समय तक ऊर्जा देता है. गर्मियों में इसे पीने से शरीर ठंडा रहता है और थकान कम महसूस होती है. यही कारण है कि इसे प्राकृतिक कूलिंग ड्रिंक भी कहा जाता है.

■ बनाने की रेसिपी

सामग्री

- रागी का आटा
- पानी
- खट्टा दही
- अदरक
- हरी मिर्च
- प्याज
- करी पत्ता
- धनिया
- नमक

विधि

सबसे पहले रागी के आटे को

ठंडे पानी में अच्छे से घोल लिया जाता है ताकि उसमें गांठें न रहें. फिर पानी उबालकर उसमें यह घोल मिलाया जाता है और लगातार चलाते हुए पकाया जाता है. कुछ देर बाद यह गाढ़ा हो जाता है.

जब मिश्रण ठंडा हो जाए, तब उसके छोटे-छोटे गोले बना लिए जाते हैं. इन गोलों को पानी में डालकर रातभर के लिए रखा जाता है ताकि उनमें हल्का फर्मेंटेशन हो सके. सुबह इन्हें पानी में अच्छी तरह मिलाकर खट्टा दही डाला जाता है.

इसके बाद स्वाद बढ़ाने के लिए अदरक, प्याज, हरी मिर्च, करी पत्ता और धनिया मिलाया जाता है. आखिर में नमक डालकर इसे ठंडा-ठंडा पिया जाता है.

अगर इसे मिट्टी के बर्तन में तैयार किया जाए, तो इसका स्वाद और भी बढ़ जाता है. मिट्टी का बर्तन ठंडक बनाए रखने में मदद करता है और फर्मेंटेशन भी अच्छे से होता है. इससे रागी अंबली में हल्का देसी स्वाद आ जाता है, जो इसे और खास बना देता है.

उपरोक्त लेखों में दी गई समस्त जानकारियां और सूचनाएं सामान्य मान्यताओं पर आधारित हैं. 'उल्हास विकास' इनकी पुष्टि नहीं करता है. इन पर अमल करने से पहले संबंधित विशेषज्ञ से संपर्क करें.

खबरें गांव की...

रिश्तेदारों से लेकर विरोधियों को पिटवाया; भाई के हत्यारे ने पुलिस को खूब छकाया

आगरा. आगरा के थाना मलपुरा क्षेत्र के गांव बाईंपुर में अनीत यादव उर्फ गणेशी की हत्या में पुलिस ने उसके छोटे भाई मनीष को रविवार को जेल भेज दिया। मनीष बेहद शातिर है। उसने एक-एक करके अपने कई विरोधियों को पुलिस से पिटवा दिया। पुलिस ने पूछा हत्या में कौन शामिल था तो वह विरोधियों को उठवाता चला गया। छानबीन में उनके खिलाफ साक्ष्य नहीं मिले तो पुलिस ने छोड़ दिया। जेल जाते समय भी वह तीन रिश्तेदारों के नाम बताकर गया है।

मथुरा में दिनदहाड़े वकील का अपहरण; घर में बनाया बंधक, फिर पुलिस ने ऐसे छुड़ाया

मथुरा. मथुरा में जमीन विवाद को लेकर पेट्रोल पंप संचालक और सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता का कोसी जाते समय रिवाल्वर के बल पर दिनदहाड़े नामजदों ने अपहरण कर लिया। आरोप है कि करीब 50 लोगों ने अधिवक्ता पर फायर भी किया। आरोप है कि आरोपियों ने अधिवक्ता को अपने घर ले जाकर बंधक बना लिया। सूचना पर अधिवक्ता को छुड़ाने गई पुलिस के लिए गेट भी नहीं खोला। इसपर पुलिस ने मकान का गेट तोड़कर अधिवक्ता को मुक्त कराया। पूर्व चेयरमैन समेत 44 आरोपियों को हिरासत में ले लिया।

पासपोर्ट सत्यापन के नाम पर होमगार्ड ले रहा था रिश्वत, वीडियो ने खोल दी पोल एसएस

गोरखपुर. यूपी के गोरखपुर के एक थाने में बैठकर खुलेआम घूस लेते होमगार्ड का वीडियो वायरल होने पर पुलिस महकमे में हड़कम्प मच गया है। पता चला है कि पासपोर्ट सत्यापन के नाम पर यह पैसा लिया जा रहा था। वायरल वीडियो सामने आने के बाद एसपी नाथ ने जांच शुरू करा दी है। सीओ कैम्पियरगंज की रिपोर्ट के आधार पर एसएसपी ने पासपोर्ट सत्यापन का काम देखने वाले मुंशी को सस्पेंड कर दिया।

लोहे की रॉड से सिर पर प्रहार कर सेल्समैन की हत्या, एक घायल

लखनऊ. यूपी के लखनऊ के मलिहाबाद के ढेड़ेमऊ में सोमवार सुबह रुपयों के विवाद में शराब दुकान के सेल्समैन अजय जायसवाल (35) के सिर पर लोहे की राड से प्रहार कर हत्या कर दी गई। हमले में बचाव में दौड़ा युवक घायल हो गया। वारदात के बाद हमलावर हत्यारोपी फरार हो गया। पुलिस की टीमें उसकी तलाश में दबिश दे रही हैं। एसीपी मलिहाबाद सुजीत कुमार दुबे के मुताबिक अजय जायसवाल सय्यद बाड़ा मोहल्ले के रहने वाले थे। वह ढेड़ेमऊ स्थित सरकारी शराब की दुकान पर सेल्समैन था। सोमवार सुबह उसका ननहक्के से विवाद हो गया। विवाद के दौरान दोनों में हाथापाई शुरू हुई। ननहक्के ने लोहे के राड से सिर पर अजय के सिर पर हमला कर दिया। शोर सुनकर पास खड़ा रज्जन दौड़ा उसने बीच बचाव की कोशिश की तो ननहक्के ने उस पर भी हमला कर दिया। हमले के बाद आरोपी ननहक्के फरार हो गया। एसीपी ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के भेजा गया है।

PM मोदी बोले- पेट्रोल-डीजल का उपयोग कम करें

- भारत में तेल के कुएं नहीं
- आज वर्क फ्रॉम होम की जरूरत
- एक साल तक सोना न खरीदें

नई दिल्ली. पीएम नरेंद्र मोदी ने रविवार को कहा कि आज के समय में पेट्रोल, गैस और डीजल का इस्तेमाल कम करना होगा। पड़ोस में चल रहे युद्ध के असर से दुनियाभर में पेट्रोल-डीजल के दाम कई गुना बढ़ गए हैं।

पीएम ने हैदराबाद में भाजपा की रैली में कहा- भारत पर इस वैश्विक संकट का असर ज्यादा है, हमारे पास तेल के बड़े कुएं नहीं हैं। आज हमें वर्क फ्रॉम होम जैसे उपायों की जरूरत है। जिन शहरों में मेट्रो है, वहां लोग मेट्रो का इस्तेमाल करें। उन्होंने कहा कि पहले जब युद्ध होता था लोग सोना दान में दे देते थे। आज दान की जरूरत नहीं है लेकिन हमें आज ये संकल्प लेना होगा कि अगले 1 साल तक कोई भी कार्यक्रम हो, सोना न खरीदें। इससे विदेशी मुद्रा भी बचेगी।

■ भारतीय घरों में दुनिया के टॉप-10 बैंकों से ज्यादा सोना

भारतीय घरों और मंदिरों में 50,000 टन सोना रखा है, जिसकी वैल्यू करीब 10 ट्रिलियन डॉलर यानी लगभग 830 लाख करोड़ है। भारतीय व्यापारियों के संगठन एसोचैम (द एसोसिएटेड चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री ऑफ इंडिया) की रिपोर्ट के अनुसार, यह दुनिया के सबसे बड़े 10 सेंट्रल बैंकों के कुल भंडार से भी ज्यादा है।

1. सोने में सालाना 6 लाख करोड़ खर्च: भारत में हर साल सोने के आयात पर लाखों करोड़ रुपए खर्च हो रहे हैं। 2024-26 में यह आंकड़ा 4.89 लाख करोड़ रुपए था, जो 2025-26 में 6.40 लाख करोड़ रुपए रहा। वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल की ताजा रिपोर्ट बताती है कि 2026 की पहली तिमाही में भारत में निवेश के लिए सोने की मांग गहनों से भी ज्यादा है।

2. विदेश यात्रा: 3 लाख करोड़ उड़ा रहे: 2023-24 में विदेश यात्राओं में भारतीयों का कुल खर्च 2.72 लाख करोड़ रुपए था, जो 2025-26 में 3.65 लाख करोड़ रुपए हो गया। यानी भारतीयों ने विदेशों में खर्च बढ़ा दिया है।

3. फर्टिलाइजर: 1.50 लाख करोड़ आयातः इस साल भारत ने विदेशों से 1.50 लाख करोड़ रुपए का फर्टिलाइजर खरीदा है। यह पिछले वित्त वर्ष की तुलना में 76% ज्यादा है। हम सबसे ज्यादा फर्टिलाइजर कतर से आयात करते हैं, जो ईरान के हमलों की चपेट में है। इसलिए फर्टिलाइजर के दाम चढ़े हुए हैं।

4. कच्चा तेल: इस साल 10 लाख करोड़ रु. का तेल आयात करना पड़ाः भारत जरूरत का 70% तेल आयात करता है। इस पर 2024-25 में 11.66 लाख करोड़ खर्च हुए। क्रूड के भाव घटने से 2025-26 में खर्च 10.35 लाख करोड़ रुपए था। पिछले दो महीने के युद्ध में क्रूड 50% महंगा हुआ है। ऐसे में खर्च 17 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच सकता है।

PM मोदी की 5 बड़ी बातें...

- **एक साल तक सोना न खरीदने की अपील-** सोने के आयात में बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा खर्च होती है। देशहित में लोगों को एक साल तक सोना खरीदने और दान करने से बचना चाहिए।
- **पेट्रोल-डीजल बचाएं, कारपूलिंग करें-** अनावश्यक वाहन उपयोग कम करें, मेट्रो में सफर और कारपूलिंग करें। ज्यादा से ज्यादा लोगों को उसमें बिठाकर ले जाएं।
- **खाद्य तेल की खपत कम करने पर जोर-** हर परिवार अगर खाने के तेल का इस्तेमाल थोड़ा कम करे, तो इससे विदेशी मुद्रा की बचत होगी और लोगों की सेहत भी बेहतर रहेगी।
- **रासायनिक खाद की जगह प्राकृतिक खेती अपनाएं-** देश को रासायनिक उर्वरकों की खपत आधी करने का लक्ष्य रखना चाहिए और तेजी से प्राकृतिक खेती की ओर बढ़ना चाहिए।
- **विदेश यात्राएं टालने की अपील-** वैश्विक हालात और महंगे ईंधन के कारण भारत पर आर्थिक दबाव बढ़ रहा है। ऐसे में शादियों, छुट्टियों और अन्य कारणों से विदेश यात्रा कुछ समय के लिए टालना देशहित में होगा।

BSF को बांग्लादेश बॉर्डर फेंसिंग के लिए जमीन मिलेगी

- बंगाल की भाजपा सरकार का फैसला
- नए आपराधिक कानून लागू होंगे, आयुष्मान पर भी काम शुरू

कोलकाता. पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी ने भारत-बांग्लादेश बॉर्डर पर फेंसिंग के लिए BSF को जमीन देने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अवैध घुसपैठ से निपटने के लिए 45 दिन के भीतर यह जमीन गृह मंत्रालय को सौंप दी जाएगी। हावड़ा के नाबन्ना में नवनिर्वाचित BJP सरकार की पहली कैबिनेट बैठक हुई। CM अधिकारी ने कहा कि यह फैसला बैठक में लिए गए मुख्य प्रस्तावों में से एक था। मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया कि TMC सरकार ने राज्य में पुराने IPC और CrPC की जगह नए आपराधिक कानून भारतीय न्याय संहिता (BNS) को लागू नहीं किया था।

राज्य में अब BNS लागू करने की आधिकारिक मंजूरी दे दी गई है। केंद्र सरकार की आयुष्मान भारत और जन आरोग्य योजना भी पश्चिम बंगाल में भी लागू की जाएंगी। पहली कैबिनेट बैठक में मंत्री दिलीप घोष, अग्निमित्रा पॉल, निशिथ प्रमाणिक, क्षुदीराम और अशोक कीर्तनिया मौजूद थे। अभी तक मंत्रियों को विभाग नहीं बांटे गए हैं।

सुवेंदु कैबिनेट की बैठक के फैसले...

- चुनावी हिंसा में मारे गए 321 BJP कार्यकर्ताओं के परिवारों की जिम्मेदारी राज्य सरकार उठाएगी।
- भारत-बांग्लादेश सीमा पर बाड़ लगाने के लिए BSF को जमीन ट्रांसफर करने की प्रक्रिया शुरू की है। इसे 45 दिनों के भीतर पूरा कर लिया जाएगा।
- आयुष्मान भारत योजना समेत केंद्र की सभी योजनाएं जल्द ही लागू होंगी। उज्ज्वला योजना से जुड़ी सभी लंबित याचिकाएं केंद्र के पास भेजी गई हैं।
- IAS और IPS अधिकारियों को सेंट्रल ट्रेनिंग की परमिशन दी जाएगी।
- बंगाल में BNS लागू नहीं था, राज्य में इसे तत्काल प्रभाव से लागू किया जाएगा।
- राज्य सरकार की नौकरियों में पांच साल का विस्तार दिया गया है।

इन्फ्लूएंसर को दौड़ा-दौड़ाकर चाकू गोदा

बिहार के मोतिहारी में परीक्षा देने आए एक युवक की निर्मम हत्या कर दी गयी। आरोपी उसी के गांव का रहने वाला है। मृतक सोशल मीडिया इन्फ्लूएंसर बताया जा रहा है। यूट्यूब पर अपलोड एक वीडियो के विवाद में आरोपी ने उसे दौड़ा-दौड़ाकर चाकू से गोद दिया। उसे दस चाकू मारा गया जिससे मौके पर ही दम तोड़ दिया। हैरानी की बात है कि आरोपी को रोकने या पकड़ने के बजाए, मौके पर मौजूद लोग वीडियो बनाते रहे। मृतक रितेश कुमार कल्याणपुर थाना क्षेत्र के देवपुर परसा गांव का रहने वाला था।

परमाणु परीक्षण पर मोदी बोले- दुनिया हिल गई थी

- विश्वभर की शक्तियां भारत को दबोचने मैदान में उतरीं, हम डटे रहे, डरे नहीं

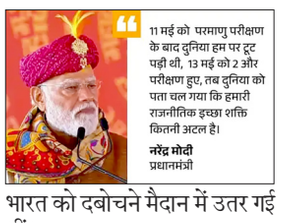

जामनगर. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सोमवार को गुजरात के सोमनाथ मंदिर में प्राण-प्रतिष्ठा के 75 साल पूरे होने के मौके पर कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने कहा- आज का दिन एक और वजह से भी खास है। आज के ही दिन 11 मई 1998 को देश ने पोकरण में परमाणु परीक्षण किया था। तब दुनिया भर की शक्तियां भारत को दबोचने मैदान में उतर गई थीं।

PM ने कहा- भारत के लिए सारे रास्ते बंद कर दिए गए थे। लेकिन हम डरे नहीं, डटे रहे। भारत ने पोकरण परमाणु परीक्षण को ऑपरेशन शक्ति नाम दिया था। क्योंकि शिव के साथ शक्ति आराधना ही हमारी परंपरा रही है। मैं भगवान सोमनाथ के चरणों में नमन करते हुए ऑपरेशन शक्ति की बधाई देता हूं।

■ वाजपेयी सरकार में हुआ था दूसरा परमाणु परीक्षण

11 मई 1998 को अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में भारत ने अपना दूसरा परमाणु परीक्षण किया था। यह काफी गोपनीय ऑपरेशन था। इसकी तैयारियां इतनी गुप्त थीं कि विदेशी खुफिया एजेंसियों को इसकी भनक तक नहीं लगी।

PM बोले- भारत को कोई झुका नहीं सकता...

- सोमनाथ हमें याद दिलाता है कि कोई भी राष्ट्र तब तक मजबूत नहीं बन सकता, जब तक वह अपनी जड़ों से जुड़ा न रहे।
- भारत में विरासत और आधुनिकता एक-दूसरे से अलग नहीं हैं, दोनों साथ-साथ चलते हैं।
- हमारे देश में सांस्कृतिक और पवित्र स्थलों के पुनर्निर्माण को लेकर काफी राजनीति हुई है। दुर्भाग्य से आज भी ऐसी ताकतें हैं, जो राष्ट्रीय स्वाभिमान से ज्यादा तुष्टिकरण को महत्व देती हैं।
- लुटेरों ने सोमनाथ मंदिर की भव्यता मिटाने की कोशिश की। इस मंदिर को बार-बार तोड़ा गया, लेकिन हर बार इसका पुनर्निर्माण हुआ।
- दुनिया की कोई ताकत भारत को झुका नहीं सकती और न ही दबा सकती है।

सुवेंदु के PA हत्याकांड में 3 संदिग्ध गिरफ्तार

- कोर्ट ने 13 दिन की पुलिस कस्टडी में भेजा
- बिहार-यूपी से पकड़ाए, एक शार्पशूटर

कोलकाता. पश्चिम बंगाल के सीएम सुवेंदु अधिकारी के पर्सनल असिस्टेंट (PA) चंद्रनाथ रथ की हत्या के मामले में बिहार और यूपी से 3 संदिग्धों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने तीनों को नॉर्थ 24 परगना के बारासात कोर्ट में पेश किया, जहां से कोर्ट ने उन्हें 13 दिन की पुलिस कस्टडी में भेज दिया।

इनमें दो युवक- मयंक राज मिश्रा और विक्की मौर्य को बिहार के बक्सर, जबकि राज सिंह को उत्तर प्रदेश के अयोध्या से गिरफ्तार किया गया। पुलिस को शक है कि इनमें से एक शार्पशूटर है।

जांच में सामने आया कि आरोपियों तक पहुंचने में टोल प्लाजा पर किया गया एक UPI पेमेंट और CCTV फुटेज सबसे बड़ा सुराग बना। ऑनलाइन ट्रांजैक्शन से जुड़े मोबाइल नंबर के जरिए पुलिस आरोपियों तक पहुंची।

बंगाल चुनाव के नतीजे आने के दो दिन बाद 6 मई को 42 साल के चंद्रनाथ रथ की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। वारदात नॉर्थ 24 परगना जिले के मध्यमग्राम इलाके में हुई। हमलावर ने रथ की कार रुकवाकर कई राउंड फायरिंग की थी। रथ को सीने और पेट में तीन गोलियां लगी थीं।

पठानकोट में एयरफोर्स स्टेशन के पास 3 संदिग्ध गिरफ्तार

- पुलिस के फर्जी आईडी कार्ड बरामद

पठानकोट. पाकिस्तान बॉर्डर से सटे पंजाब के बेहद संवेदनशील जिले पठानकोट में एयरफोर्स स्टेशन के पास 3 संदिग्धों की गिरफ्तारी से सनसनी फैल गई। तीनों के पास से पुलिस के फर्जी आईडी कार्ड भी बरामद हुए हैं। तीनों आरोपी होशियारपुर के रहने वाले हैं। पुलिस ने तीनों युवकों को हिरासत में लेकर पूछताछ की तो पता चला कि आरोपी फर्जी पुलिस आईडी कार्ड का इस्तेमाल टोल प्लाजा पर टोल से बचने के लिए कर रहे थे। पुलिस ने तीनों आरोपियों को हिरासत में लेकर उनके कब्जे से फर्जी आईडी कार्ड और कार जब्त कर ली है। आरोपियों के खिलाफ सरकारी कर्मचारी बनकर धोखा देने समेत विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज किया गया है.

राजस्थान का बाड़मेर देश में सबसे गर्म

- पारा 46.8°C
- यूपी, हरियाणा, पंजाब और बिहार में बारिश का अलर्ट

नई दिल्ली. राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में हीटवेव जारी है। रविवार को चारों राज्यों के 9 शहरों में पारा 44°C के पार रहा। राजस्थान का बाड़मेर 46.8°C के साथ देश में सबसे गर्म शहर रहा। जैसलमेर में तापमान 46.3°C और फलोदी में 46°C पहुंच गया।

मध्य प्रदेश के रतलाम में 45.5°C तापमान रहा। भोपाल में 40.4°C में 42°C जैसी झुलसाने वाली गर्मी महसूस हुई। मौसम विभाग के अनुसार 11 और 12 मई को तापमान 2 से 3 डिग्री तक और बढ़ेगा। भोपाल में पारा 42 से 43°C तक पहुंचने के आसार हैं।

इधर, गुजरात के राजकोट में 44.3°C और अमरेली में 44.1°C तापमान के कारण हीटवेव चली। महाराष्ट्र में जलगांव 44.5°C के साथ सबसे गर्म रहा। बिहार में आंधी-बारिश का दौर जारी है। यहां कैमूर जिले में रविवार को सबसे ज्यादा तापमान 38.4°C रहा।

उत्तराखंड के कई हिस्सों, खासकर पहाड़ी इलाकों में 12 और 13 मई को बारिश और खराब मौसम की आशंका है। गढ़वाल कमिश्नर ने इस दौरान चार धाम यात्रा पर जाने वाले श्रद्धालुओं से सावधानी बरतने और यात्रा से बचने की अपील की है।

आम सूचना

हम श्रीमती सरोज रामप्रकाश विश्वकर्मा व श्री रामप्रकाश मतारु विश्वकर्मा सभी को सूचित कर रहे हैं कि पोर्शन रुम, बैरक नं. 173 के सामने, उल्हासनगर- 1 (टैक्स नं. 06एओ014563500(पार्ट) उक्त प्रॉपर्टी श्रीमती सावित्री शिवदयाल विश्वकर्मा के नाम पर है उन्होंने श्रीमती चंद्राबाई नारायणदास सेवानी से एग्रीमेंट 16.12.2009 को लिया है। हमने श्रीमती सावित्री शिवदयाल विश्वकर्मा से सेल एग्रीमेंट 8.5.2026 सी.नं. 1471/2026 द्वारा खरीदी है। जिस कारण उक्त जायदाद हम अपने नाम करवाना चाहते हैं। अगर इस जायदाद पर किसी भी व्यक्ति का कोई हक्क वास्ता हो तो वो सारे सबूतों के साथ 7 दिनों के भीतर उपरोक्त दिए गए पत्ते अथवा उल्हासनगर महानगरपालिका के टैक्स विभाग में संपर्क कर सकते हैं। अन्य 7 दिनों के बाद कोई भी व्यक्ति अपना दावा पेश नहीं कर सकता है।

सही/-
श्रीमती सरोज रामप्रकाश विश्वकर्मा
व श्री रामप्रकाश मतारु विश्वकर्मा

बेंगलुरु जीत से टॉप पर आई

- मुंबई प्लेऑफ से बाहर

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु IPL के मौजूदा सीजन की पॉइंट्स टेबल के टॉप पर आ गई है। उसने रविवार के दूसरे मुकाबले में मुंबई इंडियंस पर 2 विकेट की रोमांचक जीत दर्ज की। इस हार के बाद मुंबई प्लेऑफ रेस से बाहर हो गई है।

रायपुर के शहीद वीर नारायण सिंह स्टेडियम में आखिरी बॉल तक चले मैच का टॉस बेंगलुरु ने जीता था। मुंबई ने पहले बैटिंग करते हुए 20 ओवर में 7 विकेट पर 166 रन बनाए। 167 रन का टारगेट बेंगलुरु ने 8 विकेट पर हासिल कर लिया।

■ मुंबई की 8वीं हार

बेंगलुरु को लगातार दो हार झेलने के बाद जीत मिली है। जबकि, मुंबई की टीम सीजन में 8वां मैच हारी है।

बेंगलुरु ने अब तक 11 मैच खेल लिए हैं। इनमें से टीम को 7 में जीत मिली है, जबकि उसने 4 मैच गंवाए हैं। फिलहाल, बेंगलुरु की टीम 14 अंक लेकर पॉइंट्स टेबल के पहले स्थान पर है। इतने ही अंक हैदराबाद और गुजरात के पास भी हैं, लेकिन बेंगलुरु का नेट रन रेट उनसे बेहतर है।

मुंबई पिछले दो मैच सूर्यकुमार यादव की कप्तानी में खेली। टीम 11 में से 8 मैच हार चुकी है और 6 अंक के साथ पॉइंट्स टेबल के 9वें स्थान पर है। इंडियंस की टीम अपने बचे हुए मैच जीतकर 12 तक ही पहुंच सकती है, जोकि प्लेऑफ में पहुंचने के लिए काफी नहीं हैं। ऐसे में मुंबई ज्यादा से ज्यादा मैच जीतकर फाइनल टेबल में बेहतर रैंक हासिल करना चाहेगी।

■ भुवनेश्वर ने तीसरे ओवर में लगातार दो विकेट लिए

मुंबई के तीसरे ओवर में भुवनेश्वर कुमार ने दो विकेट लिए। पांचवीं बॉल पर उन्होंने नकल बॉल पर रोहित शर्मा को विकेटकीपर जितेश शर्मा के हाथों कैच कराया। अगली गेंद पर सूर्यकुमार यादव को स्लिप में खड़े विराट कोहली ने लो कैच पकड़कर पवेलियन भेज दिया।

■ तिलक का कैच छूटा, मुंबई के टॉप स्कोरर रहे

छठे ओवर में तिलक वर्मा को जीवनदान मिला। रसिख सलाम की स्लोअर गेंद पर तिलक का टॉप एज मिडविकेट की ओर गया, लेकिन सुयश शर्मा आसान कैच नहीं पकड़ सके। गेंद उनके हाथों से निकल गई। तिलक उस समय 11 रन पर खेल रहे थे। बाद में उन्होंने 57 रन की पारी खेली और मुंबई के टॉप स्कोरर रहे।

■ कोहली लगातार दूसरे मैच में शून्य पर आउट

167 रन चेज कर रही बेंगलुरु ने चौके से शुरुआत की। बेथेल ने दीपक चाहर की पहली दो गेंदों पर चौके लगाए। फिर चाहर ने चौथी बॉल पर विराट कोहली को राज बावा के हाथों कैच कराया। विराट खाता नहीं खोल सके। वे लगातार दूसरे मैच में शून्य पर आउट हुए। IPL में यह उनका 8वां जीरो था।

ममता की योजना नहीं रोकेंगे शुभेंदु अधिकारी

कोलकाता. पश्चिम बंगाल के नए मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी अब ऐक्शन मोड में आ चुके हैं। सोमवार को उन्होंने कुछ अहम ऐलान किए। इसमें एक ऐलान पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की सरकार से जुड़ा था। शुभेंदु अधिकारी ने कहाकि भाजपा सरकार, लक्ष्मी भंडार जैसी कल्याणकारी योजनाओं पर लगाम नहीं लगाएगी। अधिकारी ने सोमवार को एक कैबिनेट मीटिंग की अध्यक्षता की, जिसमें छह फैसले लिए गए। इसके बाद मीडिया से बात करते हुए उन्होंने लक्ष्मी भंडार योजना को लेकर भी बात की। शुभेंदु सरकार ने हिंसामुक्त और सफल चुनाव के लिए चुनाव आयोग का शुक्रिया अदा किया। इसके अलावा प्रदेश में चुनावी हिंसा के दौरान मारे गए भाजपा कार्यकर्ताओं को भी श्रद्धांजलि दी गई।

क्या है लक्ष्मी भंडार योजना

लक्ष्मी भंडार योजना ममता बनर्जी सरकार द्वारा शुरू की गई अति महत्वाकांक्षी योजना थी। इसे साल 2021 में लांच किया गया था। इस योजना के तहत समाज की आर्थिक रूप से महिलाओं को आर्थिक मदद मुहैया कराई जाती है। इस योजना के लिए योग्य अभ्यर्थियों में 25 से 60 साल की महिलाएं शामिल हैं। इसके तहत एससी या आदिवासी महिलाओं को हर महीने 1200 रुपए और अन्य वर्ग की महिलाओं को 1000 रुपए हर महीने दिया जाता है। 2021 चुनाव से पहले इस योजना को ममता का मास्टरस्ट्रोक माना गया था। इस योजना ने ममता के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर की काट के तौर पर काम किया।

केरलम सीएम का ऐलान जल्द

- वेणुगोपाल राहुल की पसंद
- कांग्रेस नेता बोले- हमारे यहां मोदी-शाह सारे फैसले लें, ऐसा सिस्टम नहीं

नई दिल्ली. कांग्रेस सांसद राहुल गांधी की केरलम सीएम के लिए पहली पसंद केसी वेणुगोपाल हैं। सूत्रों के मुताबिक, राहुल ने दिल्ली में वेणुगोपाल से अकले में मुलाकात की। ऐसे में पार्टी जल्द ही सीएम चेहरे का ऐलान कर सकती है। वेणुगोपाल फिलहाल अलाप्पुझा लोकसभा सीट से सांसद हैं।

केरलम के अगले CM के चुनाव को लेकर चल रही चर्चाओं के बीच कांग्रेस के सीनियर लीडर रमेश चेन्निथला ने भाजपा पर निशाना साधा। चेन्निथला ने कहा- कांग्रेस पार्टी में सीएम का चुनाव लोकतांत्रिक तरीके से होता है। हमारे यहां मोदी-शाह सारे फैसले लें, ऐसा सिस्टम नहीं है।

केरलम में चुनावी नतीजे आए 6 दिन हो गए हैं। अभी तक सीएम का ऐलान नहीं हो पाया है। राज्य में 10 साल बाद कांग्रेस की वापसी हुई। कांग्रेस ने 140 में से 63 सीटें जीतीं। 26 सीटों के साथ दूसरे नंबर पर CPI(M) रही। LDF की हार पर सीएम पिनाराई विजयन पद से इस्तीफा दे चुके हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक, कांग्रेस के 63 विधायकों में 75-80% ने के.सी. वेणुगोपाल को समर्थन दिया। वेणुगोपाल के सीएम बनने पर इरिक्कूर से चुनाव जीते सनी जोसेफ अपनी सीट से इस्तीफा दे सकते हैं। इससे वेणुगोपाल के सीएम बनने के बाद इस सीट से चुनाव लड़कर विधायक का चुनाव लड़ेंगे।

रिपोर्ट्स के मुताबिक, बैठक में वीडी सतीशन को महज 6 विधायकों का समर्थन मिला। हालांकि, बैठक के बाद तीन पूर्व प्रदेश अध्यक्षों ने सतीशन के नाम का समर्थन किया है। इसके अलावा UDF के सहयोगी दल IUML और केरलम कांग्रेस (जोसेफ) ने खुले तौर पर सतीशन को समर्थन दिया है।

आम सूचना

मैं श्री विजय विठ्ठल सोनवणे सभी को सूचित कर रहा हूं कि रुम, एमआयडीसी, इंदिरा नगर, पानी टंकी के पास, उल्हासनगर- 1 (टैक्स नं. 04एओ01308000) उक्त प्रॉपर्टी श्री विठ्ठल शंकर सोनवणे के नाम पर है। उनका निधन 4.8.1994 को हो गया। श्रीमती वत्सलाबाई विठ्ठल सोनवणे का निधन 14.5.2001 को हुआ। चंद्रकांत विठ्ठल सोनवणे का निधन 4.2.2014 को हुआ। वाल्मीक विठ्ठल सोनवणे का निधन 11.7.2022 को हुआ। श्रीमती यशोदा चंद्रकांत सोनावणे, श्रीमती वैशाली महेश अभंग, श्रीमती रत्ना वाल्मीक सोनवणे व श्री गणेश वाल्मीक सोनवणे ने रिलीज एग्रीमेंट 11.5.2026 सी.नं. 1495/2026 द्वारा मुझे दी है। जिस कारण उक्त जायदाद मैं अपने नाम करवाना चाहता हूं। अगर इस जायदाद पर किसी भी व्यक्ति का कोई हक्क वास्ता हो तो वो सारे सबूतों के साथ 7 दिनों के भीतर उपरोक्त दिए गए पत्ते अथवा उल्हासनगर महानगरपालिका के टैक्स विभाग में संपर्क कर सकते हैं। अन्य 7 दिनों के बाद कोई भी व्यक्ति अपना दावा पेश नहीं कर सकता है।

सही/-
श्री विजय विठ्ठल सोनवणे

आम सूचना

हम श्री गणेश बालू भोईर व श्री विलास कालूराम दोंड सभी को सूचित कर रहे हैं कि शॉप, न्यू टेलीफोन एक्सचेंड एंड सचदेव काम्पलेक्स के पास, अमित टावर के सामने, ब्लॉक ए-43, उल्हासनगर- 1 (टैक्स नं. 11बीआय004310300) उक्त प्रॉपर्टी श्री मोहनलाल @ मोहनदास लोकुमल चांदवानी, श्री विक्की मोहनलाल @ मोहनदास चांदवानी, श्री सन्नी मोहनलाल @ मोहनदास चांदवानी से सेल एग्रीमेंट 6.5.2026 सी.नं. 1433/2026 द्वारा खरीदी है। जिस कारण उक्त जायदाद हम अपने नाम करवाना चाहते हैं। अगर इस जायदाद पर किसी भी व्यक्ति का कोई हक्क वास्ता हो तो वो सारे सबूतों के साथ 7 दिनों के भीतर उपरोक्त दिए गए पत्ते अथवा उल्हासनगर महानगरपालिका के टैक्स विभाग में संपर्क कर सकते हैं। अन्य 7 दिनों के बाद कोई भी व्यक्ति अपना दावा पेश नहीं कर सकता है।

सही/-
श्री गणेश बालू भोईर व
श्री विलास कालूराम दोंड

संक्षेप...

भिवंडी में 24 घंटे के लिए बंद रहेगी जलापूर्ति

भिवंडी. जल शुद्धीकरण केंद्र टेमघर में केबल रिपेयर का काम और भिवंडी PWRM वॉटर पाइपलाइन लीक रिपेयर का काम स्टेम प्राधिकरण के ज़रिए किया जाना है. बुधवार को सुबह 9.00 बजे से गुरुवार, 14/05/2026 को सुबह 9.00 बजे तक 24 घंटे का शटडाउन रखा जाएगा। इस वजह से, भिवंडी शहरों के लिए STEM से पानी की सप्लाई बंद रहेगी और अगले एक दिन तक कम प्रेशर और कम मात्रा में पानी की सप्लाई होगी। भिवंडी मनपा प्रशासन ने उक्त जानकारी देते हुए लोगों से अपील की है कि पानी का इस्तेमाल संभल कर करें.

कामवारी नदी अतिक्रमण और प्रदूषण की चपेट में

■ **प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड की लापरवाही ला रही 'रंग'**

भिवंडी. भिवंडी तालुका में कामवारी नदी की हालत प्रदूषण और अतिक्रमण के कारण दिन-ब-दिन गंभीर होती जा रही है और अतिक्रमण और बढ़ते प्रदूषण के कारण नदी खत्म होने की कगार पर है। पहले इस नदी के पानी पर ग्रामीण इलाकों में खेती की जाती थी, लेकिन शहर की सीमा में घुसते ही नदी सीवर में तब्दील हो रही है। भिवंडी महानगर पालिका के अधूरे सीवेज डिस्पोजल प्रोजेक्ट के कारण शहर का सीवेज बिना किसी ट्रीटमेंट के सीधे नदी में छोड़ा जा रहा है।

साथ ही, शहर और पास के शेलार ग्राम पंचायत की सीमा में डाइंग, साइजिंग और केमिकल कंपनियों से केमिकल वाला पानी नदी में छोड़े जाने से प्रदूषण बहुत बढ़ रहा है। इससे जलीय जीवन नष्ट हो रहा है. दूसरी तरफ, नदी के किनारे बड़े पैमाने पर अतिक्रमण होने से इसका बहाव कम हो गया है और मानसून में बाढ़ का खतरा बढ़ गया है।

जब से मनपा प्रशासन, रेवेन्यू प्रशासन और प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड इस गंभीर मुद्दे को नज़रअंदाज़ कर रहे हैं, नदी सचमुच खराब हो गई है। नदी की सफाई के लिए करोड़ों रुपये का फंड मिलने के बावजूद कोई ठोस काम न होने से लोगों में गुस्सा है। डर है कि अगर कामवारी नदी को फिर से ज़िंदा करने के लिए तुरंत असरदार कदम नहीं उठाए गए, तो इस नदी का वजूद खत्म हो जाएगा।

स्थानीय महिला रूमिन फरीद ने कहा कि नदी के पास की सभी इमारतों का गंदा पानी बिना किसी ट्रीटमेंट के सीधे नदी में छोड़ा जा रहा है। सालों से सफाई न होने से यह खराब हो गई है। अब मनपा और ज़िला प्रशासन नदी को लेकर कदम उठा रहा है, देखते हैं यह कब पूरा होता है.

कामवारी नदी ग्रामीण इलाकों से होकर बहती है और शहर की सीमा से खाड़ी में मिलती है। इस नदी का ज़्यादातर हिस्सा ग्रामीण इलाकों में है, जबकि 3 km का हिस्सा भिवंडी मनपा बॉर्डर पर है। पहले इस नदी के किनारे से पानी के पौधे हटाने का कैंपेन चलाया गया था। सीवेज को लेकर भी कदम उठाए गए हैं। जब से अंडरग्राउंड सीवर स्कीम लागू हुई है, तब से जो

शादी का झांसा देकर गर्लफ्रेंड का अबॉर्शन और टॉर्चर

■ **आरोपी शख्स गिरफ्तार**

भिवंडी. कल्याण ईस्ट में रहने वाले एक 40 साल के आशिक ने अपनी 27 साल की गर्लफ्रेंड को शादी का झांसा दिया और कहा कि वह अपनी पहली पत्नी को तलाक दे देगा। उसने पीड़िता को जबरदस्ती दुष्कर्म किया. पीड़िता के प्रेग्नेंट होने के बाद उसने उसे अबॉर्शन पिल्स दीं और पीड़िता की मर्ज़ी के खिलाफ अबॉर्शन करवा दिया। जब पीड़िता के माता-पिता शादी की बात करने के लिए बॉयफ्रेंड के पास गए तो बॉयफ्रेंड ने उन दोनों के साथ गाली-गलौज और मारपीट की। इस मामले में पीड़िता की शिकायत पर कोनगांव पुलिस स्टेशन में बॉयफ्रेंड के खिलाफ केस दर्ज किया गया है और पुलिस ने उस आदमी को हिरासत में लेकर गिरफ्तार कर लिया है।

पुलिस के मुताबिक, पीड़िता और गिरफ्तार बॉयफ्रेंड दोनों कल्याण ईस्ट में रहते हैं। 20 सितंबर, 2024 से 21 अप्रैल, 2026 के दौरान बॉयफ्रेंड ने अपनी पहली पत्नी को तलाक देने और शादी का झांसा देकर यहां एक लॉज में पीड़िता के साथ जबरदस्ती रेप किया। पीड़िता के प्रेग्नेंट होने के बाद उसने उसे अबॉर्शन पिल्स देकर अबॉर्शन के लिए मजबूर किया। इसके बाद पीड़िता के माता-पिता बॉयफ्रेंड के पास यह बात करने गए कि वह अपनी पहली पत्नी को तलाक देकर पीड़िता से शादी कब करेगा, लेकिन बॉयफ्रेंड ने पीड़िता के माता-पिता के साथ गाली-गलौज और मारपीट की। इस मामले में पीड़िता ने बॉयफ्रेंड के खिलाफ कोनगांव पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई।

आग लगने से 35 बिजली मीटर जलकर हुए खाक

ठाणे. सोमवार सुबह 4 बजे बिल्डिंग के बिजली मीटर बॉक्स में अचानक शॉर्ट सर्किट से आग लग गई, जिससे बिल्डिंग में लगे 35 से 40 बिजली मीटर जलकर खाक हो गए। ठाणे आपदा प्रबंधन विभाग ने बताया कि इस घटना में कोई घायल या हताहत नहीं हुआ।सोमवार सुबह 4 बजे ठाणे के चरई इलाके में दगड़ी स्कूल के पास स्थित सात मंजिला इमारत आनंद विला के ग्राउंड पर लगे बिजली के मीटर बॉक्स में अचानक आग लग गई। ठाणे आपदा प्रबंधन विभाग ने बताया कि मीटर बॉक्स में लगे 35 से 40 बिजली के मीटर आग की चपेट में आगई।अग्निशमन विभाग कर्मचारियों के साथ आपदा प्रबंधन कर्मी, नौपाड़ा पुलिस स्टेशन के पुलिसकर्मी और महावितरण के कर्मचारी मौके पर मौजूद थे। बिजली के मीटर बॉक्स में लगी आग को लगभग आधे घंटे में बुझा दिया।

वागले इस्टेट नागरिकों में भय का माहौल

■ **पानी पीते हुए तेंदुए का वीडियो वायरल**

ठाणे. वागले इस्टेट परिसर के हनुमान नगर में स्थित जनरल मुस्लिम कब्रिस्तान-वन कार्यालय के पास एक तेंदुए को पानी पीते देखे जाने के बाद बस्ती के निवासियों में भय का माहौल। तेंदुए के पानी पीते हुए का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है। तेंदुए के दूसरी बार देखे जाने से नागरिक दहशत में हैं।

कुछ दिन पहले ठाणे के वागले डिवीजन के हनुमान नगर इलाके में भी एक तेंदुआ देखा गया था। इसलिए, स्थानीय निवासी तेंदुए को जल्द से जल्द पकड़ने की मांग कर रहे हैं। वन विभाग के माध्यम से नागरिकों से सतर्क रहने का आग्रह किया गया है।

रविवार की सुबह एक बार फिर तेंदुए ने नागरिकों के मन में दहशत पैदा कर दी है। बताया जा रहा है कि यह वीडियो सुबह मामा-भंजे दरगाह जाने वाली सड़क पर वन चौकी के पास बनाया गया था। वीडियो मोबाइल फोन से तब बनाया गया जब तेंदुआ पानी पी रहा था। तेंदुए के दूसरी बार देखे जाने से स्थानीय लोगों में डर का माहौल है और नागरिकों से सतर्क रहने का आग्रह किया गया है।

तेंदुए के दूसरी बार देखे जाने से ठाणे के वागले डिवीजन के लोकमान्य नगर, इंदिरा नगर, रूपा देवीपाड़ा और हनुमान नगर के स्थानीय निवासियों में डर का माहौल फैल गया है। तेंदुआ आधी रात को नहीं बल्कि सुबह दिखाई दिया, इसलिए अब लोग अपने घरों से बाहर निकलने से डर रहे हैं। कई जगहों पर तेंदुए के देखे जाने से अब इस पहाड़ी क्षेत्र के निवासियों में डर फैल गया है। यह भी मांग की जा रही है कि वन विभाग अब तेंदुए को पकड़ने के लिए पिंजरा लगाए। इस संबंध में वन विभाग के अधिकारियों से संपर्क नहीं हो सका।

आपत्तिजनक स्टेटस पोस्ट करने पर कांस्टेबल सस्पेंड

भिवंडी. भिवंडी के पुलिस उपायुक्त शशिकांत बोराटे ने एक पुलिस कांस्टेबल को सस्पेंड कर दिया है. कांस्टेबल ने भिवंडी के टेमघर गांव में गांव की देवी की यात्रा के दौरान पारंपरिक पूजा कर रहे एक पुजारी का वीडियो पोस्ट किया था और अपने मोबाइल फोन पर आपत्तिजनक टेक्स्ट लिखा था। जिस पुलिस कांस्टेबल पर कार्रवाई की गई है, उसका नाम अंकुश रमेश सानप है।

पुलिस के मुताबिक, 7 मई को कोनगांव पुलिस स्टेशन में काम करने वाले पुलिस कांस्टेबल अंकुश सानप ने अपने मोबाइल फोन के स्टेटस पर टेमघरगांव में गावदेवी यात्रा के दौरान पारंपरिक पूजा कर रहे एक पुजारी का वीडियो पोस्ट किया था और समुदाय की भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाला टेक्स्ट लिखा था।

जब स्थानीय नगरसेवक रोहित चौधरी ने सानप से इस बारे में पूछा, तो उसने गाली-गलौज की और उनके साथ बदतमीजी की। इस संबंध में नगरसेवक रोहित चौधरी द्वारा शांतिनगर पुलिस स्टेशन में की गई शिकायत को गंभीरता से लेते हुए पुलिस उपायुक्त शशिकांत बोराटे ने यह सस्पेंशन कार्रवाई की है।

रुक्मिणीबाई अस्पताल में MSF के सुरक्षा रक्षक की पिटाई

कार चालक ने रॉड से किया हमला

कल्याण. कल्याण के रुक्मिणीबाई अस्पताल परिसर में महाराष्ट्र सुरक्षा बल (एमएसएफ) के जवान की पिटाई किए की घटना सामने आई है। गाड़ी पार्किंग को लेकर हुए विवाद चार पहिया वाहन के चालक ने एमएसएफ के सुरक्षा रक्षक किशोर लोटे पर रॉड से हमला किया।

जानकारी के अनुसार महाराष्ट्र सुरक्षा बल के सुरक्षा रक्षक किशोर लोटे रुक्मिणीबाई अस्पताल में ड्यूटी पर तैनात थे। एक मरीज के परिजन ने अस्पताल के गेट पर कार खड़ी कर दी। गेट के सामने कार पार्क किए जाने से आने-जाने वाला रास्ता बाधित हो गया। सुरक्षा रक्षक किशोर ने कार चालक को कार गेट के सामने से हटाकर दूसरी जगह पार्क करने के लिए कहा।

इस बात को लेकर कार चालक और किशोर लोटे के बीच बहस हो गई। इसके बाद कार चालक ने सुरक्षा रक्षक की पिटाई करदी, और रॉड से उनपर हमला कर दिया। मारपीट में किशोर का यूनिफॉर्म भी फट गया। घटना के कारण अस्पताल परिसर में हड़कंप मच गया। महात्मा फुले पुलिस ने आरोपी कार चालक के खिलाफ आपराधिक मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी।

होंडा सिटी कार में लगी आग

■ **ड्राइवर बच गया**

ठाणे. मुंब्रा जा रही एक होंडा सिटी कार में अचानक आग लग गई। आग में कार पूरी तरह जलकर राख हो गई। मौके पर मौजूद डिजास्टर मैनेजमेंट टीम और फायर ब्रिगेड के लोगों ने आग पर काबू पा लिया।

यह घटना रविवार दोपहर करीब 2:15 बजे हुई। ठाणे डिजास्टर मैनेजमेंट डिपार्टमेंट ने बताया कि किसी के हताहत होने की खबर नहीं है।रविवार दोपहर, मुंब्रा जाने वाली सड़क पर रेतीबंदर कलवा ठाणे के पास खारेगांव टोल प्लाजा पर एक होंडा सिटी कार में अचानक आग लग गई। इस कार में ड्राइवर वलीवुला चौधरी घाटकोपर से डोंबावली जा रहा था। जैसे ही उसे पता चला कि होंडा सिटी कार में आग लग गई है, चौधरी कार से कूद गया और खुशकिस्मती से बच गया। आग लगते ही चलती कार को सड़क के किनारे रोक दिया गया। ट्रैफिक पुलिस के लोग, फायर ब्रिगेड के लोग और डिजास्टर मैनेजमेंट डिपार्टमेंट के लोग मौके पर पहुंचे और आग पर काबू पाया। 15 मिनट की मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया गया। तब तक होंडा सिटी कार जलकर राख हो चुकी थी।

पालघर डिस्ट्रिक्ट सेंट्रल बैंक बनाने के लिए हाईकोर्ट में पिटीशन

■ **भूमिपुत्र एल्गार संगठन के प्रमोद पवार ने हाई कोर्ट का रुख किया**

भिवंडी. ठाणे डिस्ट्रिक्ट सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक को अलग करके पालघर डिस्ट्रिक्ट सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक बनाने का मामला पिछले 12 सालों से पेंडिंग है और इसके लिए भूमिपुत्र एल्गार संगठन के फाउंडर प्रमोद पवार ने हाई कोर्ट में लेटर पिटीशन फाइल की है। इसमें ठाणे डिस्ट्रिक्ट सेंट्रल बैंक के इलेक्शन प्रोसेस और रिक्रूटमेंट को चैलेंज किया गया है। साथ ही सेक्शन 77-A के तहत इंडियन एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस के IAS रैंक के ऑफिसर को बैंक का एडमिनिस्ट्रेटर अपॉइंट करने की मांग की गई है। इससे कोऑपरेटिव सेक्टर और राजनीतिक क्षेत्र में बड़ी हलचल मच गई है।

पालघर जिला 1 अगस्त 2014 को बना था, लेकिन 12 साल बाद भी जिले के लिए एक इंडिपेंडेंट कोऑपरेटिव बैंक नहीं बन पाया है। 7,300 करोड़ रुपये के टर्नओवर वाले ठाणे जिला बैंक पर अभी भी ठाणे के पॉलिटिकल लीडर्स का दबदबा है।

प्रमोद पवार ने सनसनीखेज आरोप लगाया है कि पालघर के किसानों और मेहनती बेटों का पैसा ठाणे की राजनीति के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। जबकि बैंक का अधिकार क्षेत्र बदल गया है, नई वोटर लिस्ट और चुनाव क्षेत्रों के पुनर्गठन के बिना चुनाव कराए जा रहे हैं।

आरोप लगाया गया है कि संपत्ति और देनदारियों के बंटवारे से पहले चुनाव कराना पालघर जिले के खजाने पर हमला करने जैसा है। इस बीच, बैंक बंटवारे से पहले ही जल्दबाजी में की जा रही नौकरियों की भर्ती पालघर के पढ़े-लिखे बेरोजगारों के अधिकारों पर हमला है।

हाईकोर्ट जाने से पहले, प्रमोद पवार ने मुख्यमंत्री, सहकारिता मंत्री और रजिस्ट्रार को एक निवेदन लिखकर इस मामले पर ध्यान दिलाते हुए आंदोलन की चेतावनी दी थी। अगर बंटवारे पर तुरंत फैसला नहीं लिया गया, तो संगठन ने पूरे पालघर जिले में एक सार्वजनिक आंदोलन शुरू करने की भी चेतावनी दी है। क्या अब जब मुंबई हाई कोर्ट ने 'लेटर पिटीशन' पर संज्ञान ले लिया है, तो पालघर जिले को न्याय मिलेगा? पूरे राज्य ने इस पर ध्यान दिया है।

मेरे बच्चों को हिंदू धर्म के खिलाफ भड़काया जा रहा

दरअसल सेलिना जेटली और उनके पति पीटर हाग के बीच कानूनी विवाद चल रहा है। मुंबई पुलिस ने पीटर के खिलाफ घरेलू हिंसा, क्रूरता और छल के आरोपों में FIR दर्ज की है। जांच में सहयोग न करने की वजह से पुलिस ने पीटर के खिलाफ लुकआउट सर्कुलर (LOC) भी जारी कर दिया है।

■ **शादी के 15 सालों में उत्पीड़न का आरोप**

■ **सेलिना जेटली बोलीं- उन्हें कहीं छिपा दिया गया**

■ **पति पर घरेलू हिंसा और धोखे का आरोप**

बॉलीवुड एक्ट्रेस सेलिना जेटली ने मदर्स डे के मौके पर सेलिना ने एक बेहद इमोशनल नोट शेयर किया है। उन्होंने बताया कि उन्हें उनके बच्चों से दूर रखा जा रहा है और उनका धर्म परिवर्तन कराने की कोशिश हो रही है।

सेलिना ने साल 2010 में ऑस्ट्रियाई बिजनेसमैन पीटर हाग से शादी की थी। एक्ट्रेस का आरोप है कि शादी के तुरंत बाद ही उनके साथ दुर्व्यवहार और उत्पीड़न शुरू हो गया था। सेलिना ने बताया कि वह अपने पड़ोसियों की मदद से चुपचाप उस अपमान और डर के माहौल से बचकर निकली थीं।

उनके मुताबिक, 15 साल की शादी में उनसे उनकी मेहनत की कमाई और प्रॉपर्टी छीनने की कोशिश की गई और उन्हें मानसिक रूप से प्रताड़ित किया गया।

SHAHEED DUNICHAND T. KALANI MEMORIAL TRUST'S
JUNIOR COLLEGE OF EDUCATION

Add Site No.57, A-Block Road, Near Shahad Rly. Station (E),
Ulhasnagar – 421 001, DIST: THANE,
TEL. NO. 0251-2733108 Email ID- sdtk@rediffmail.com
Website : www.kalanicollege.in

First Year D.El.Ed. (Old name D.T.Ed./D.Ed) A.Y. 2026-27

Applications are invited for admission to the **First Year D.El.Ed. (Old name D.T.Ed./ D.Ed) Permanently unaided Course (English Medium)** under **SINDHI MINORITY/ MANAGEMENT** Quota. The candidate should be a domicile of Maharashtra State and have passed H.S.C. Examination of Maharashtra State Board of Secondary and Higher Secondary/C.B.S.E/ I.C.S.E./ N.I.O.S/ Other State Board with minimum 49.50% and above marks for Open category candidates and 44.50% and above marks for backward class candidates. All admissions will be done as per rule No. 6 mentioned in SCERT admission rules and information brochure **2026-27**. Total Intake of 50 seats **(Science -25, Arts –20, Commerce–04 and M.C.V.C.-01)** are to be filled from amongst the eligible candidates under **Sindhi Minority/ Management** quota strictly in order of merit in accordance with the Government regulations for admissions. If seats remain vacant from Sindhi minority quota then eligible candidate from non-minority, those who have already applied for Govt. centralised admission will be admitted purely on merit basis.

Category wise Reservation:

Category	SC/ST	VJA/NTB/NTC/NTD	SBC/OBC	OPEN	TOTAL
	20%	11%	19%	50%	100%
Seats	10	06	09	25	50

Online application forms will be available on website: **www.maa.ac.in** from Dt. 11.05.2026 to 25.05.2026.
Fee for Online Application Form is Rs. 200/- for General Category and Rs. 100/- for Reserve Category. Total Annual Course Fees Rs. 12,000/-.
Office Time: 10.00 am and 05.00 pm.
Please Visit www.maa.ac.in for further details.

Sd/-
Principal

आम सूचना

मैं श्री दिलीप गोविंदा दोंड सभी को सूचित कर रहा हूं कि रुम, बैरक नं. 417, गोल मैदान सामने, उल्हासनगर- 1. (टैक्स नं. 15एआय018504900) उक्त प्रॉपर्टी श्री संतोष प्रकाश कोतकर के नाम पर है। उनसे सेल एग्रीमेंट दि. 9.5.2026 सी.नं. 332/2026 द्वारा मैंने खरीदी है। जिस कारण उक्त जायदाद मैं अपने नाम करवाना चाहता हूं। अगर इस जायदाद पर किसी भी व्यक्ति का कोई हक्क वास्ता हो तो वो सारे सबूतों के साथ 7 दिनों के भीतर उपरोक्त दिए गए पत्ते अथवा उल्हासनगर महानगरपालिका के टैक्स विभाग में संपर्क कर सकते हैं। अन्य 7 दिनों के बाद कोई भी व्यक्ति अपना दावा पेश नहीं कर सकता है।

सही/-
श्री दिलीप गोविंदा दोंड

आम सूचना

मैं श्रीमती सुषमा उदयभान चौहान सभी को सूचित कर रही हूं कि रुम, हनुमान नगर टेकड़ी, खेमानी, जय संतोष माता मंदिर के पास, ओटी सेक्शन, उल्हासनगर- 2. (टैक्स नं. 19बीओ018167700) उक्त प्रॉपर्टी श्रीमती बिंदु धर्मेंद्र शर्मा के नाम पर है। उनसे सेल एग्रीमेंट दि. 9.3.2026 सी.नं. 283/2026 द्वारा मैंने खरीदी है। जिस कारण उक्त जायदाद मैं अपने नाम करवाना चाहती हूं। अगर इस जायदाद पर किसी भी व्यक्ति का कोई हक्क वास्ता हो तो वो सारे सबूतों के साथ 7 दिनों के भीतर उपरोक्त दिए गए पत्ते अथवा उल्हासनगर महानगरपालिका के टैक्स विभाग में संपर्क कर सकते हैं। अन्य 7 दिनों के बाद कोई भी व्यक्ति अपना दावा पेश नहीं कर सकता है।

सही/-
श्रीमती सुषमा उदयभान चौहान

आम सूचना

मैं लायसनजहॉ इस्लाम खान सभी को सूचित कर रहा हूं कि रुम, ब्लॉक ए-13 के पास, राजीव गांधी नगर, उल्हासनगर- 1. (टैक्स नं. 09एओ017426701) उक्त प्रॉपर्टी जब्बार अब्दुल कादीर खान के नाम पर है। उनसे सेल एग्रीमेंट दि. 11.5.2026 सी.नं. 1483/2026 द्वारा मैंने खरीदी है। जिस कारण उक्त जायदाद मैं अपने नाम करवाना चाहता हूं। अगर इस जायदाद पर किसी भी व्यक्ति का कोई हक्क वास्ता हो तो वो सारे सबूतों के साथ 7 दिनों के भीतर उपरोक्त दिए गए पत्ते अथवा उल्हासनगर महानगरपालिका के टैक्स विभाग में संपर्क कर सकते हैं। अन्य 7 दिनों के बाद कोई भी व्यक्ति अपना दावा पेश नहीं कर सकता है।

सही/-
लायसनजहॉ इस्लाम खान

PUBLIC NOTICE

Date: 10/09/2026

This is to inform to the general public that my client intends to purchase a Residential property known as Wing/Room No.01(Area Adm.72 Sq.Yds.) and Wing/Room No.2(Area Adm.68 Sq.Yds.) of Brk.No.1298, along with Additional strip If land to Room No.1 and 2 of Bk.No.1298. Sheet No.14(Area Adm.28 Sq.Yds.), and Portion of Wing/Room No.3 of Brk.No.1298(Area ADdm.22.6/9 Sq.Yds..) total C.D Area of same properties are 190.6/9 Sq.Yds, and other its adjacent land of same properties area of 755 Sq. Yds., which is Non C.D area), and the total C.D and Non C.D area is 945.6/9 Sq. Yds.. present owners (1) Shri Naresh S/o.Anil Advani and (2) Shri Mahesh S/o. Nirmal Sanware.

That if any person/s has/have any kind of right, interest, share, claim, of whatsoever nature over the abovesaid properties by way of any nature including all claims by way sale, exchange, mortgage, gift, possession, license, lease, liens, easements, or otherwise whatsoever are hereby require to make the same in writing to the undersigned within 07 (Seven) days from publishing of this notice, thereafter sale shall be completed without reference to such claim and same objection which may be raised after above said period shall be considered as waived.

(R.T.RAMRAHIYANI)
ADVOCATE
Flat No..201, Yash Cottage,
Block No.A-244/488, Nr. Satyasai Niketan School,
Ulhasagar-421 004, Dist. Thane
9320667400/9422667400

यह वृत्तपत्र प्रकाशक, मुद्रक, संपादक **श्री हीरो अशोक बोधा** ने श्री गोपाल प्रेस, ब्लॉक नं. ए-99/593, वेनसी जगनानी मार्ग, इंदिरा गांधी गार्डन के पास, उल्हासनगर- 421001. जिल्हा ठाणे, महाराष्ट्र से छपवाकर ब्लॉक नं. ए-99/593, वेनसी जगनानी मार्ग, इंदिरा गांधी गार्डन के पास, उल्हासनगर- 421001. जिल्हा ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया. **आर.एन.आई. नं. 43638/85** Email: ulhasvikas@gmail.com संपादकीय-विज्ञापन फोन : 2709099